उसने कहा

(लेखक के छः अमर चित्रों से सुसज्जित)

लेखक

खलील जिब्रान

अनुवादक

नरेन्द्र चौधरी डी० लिट्०

भारती एसोसिएशन प्रकाशन

गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

प्रकाशक
(श्रीमती) रीता चौधरी
भारती एसोसियेशन पब्लिकेशन्स गाजियाबाद उ० प्र०

प्रथम संस्करण : १९५७
मूल्य दो रुपये

मुख्य वितरक
राजकमल पब्लिकेशन्स लि०
८ फ़ैज़ बाजार दिल्ली
पटना इलाहाबाद बम्बई

मुद्रक
श्री गोपीनाथ सेठ
नवीन प्रेस दिल्ली

महाकवि खलील जिब्रान

एक परिचय

कवि ज्ञानी और चित्रकार खलील जिब्रान (Khalil Gibran) का जन्म सन् १८८३ में सीरिया देश के मांउट लेबनान प्रान्त के बशेरी (Bsherri) नामक नगर में हुआ था। लेबनान वही प्रान्त है जहाँ मसीहियों के अनेक पैगम्बर पैदा हो चुके हैं। आज संसार में कवि जिब्रान 'लेबनान का अग्रदूत' के नाम से विख्यात है। बारह वर्ष की आयु में ही उनके पिता उन्हें लेकर योरोप-यात्रा पर निकल पड़े थे। करीब दो वर्ष बाद वापस सीरिया पहुँचे और कवि को बेरुत नगर के 'मदरसात अल हिक्मत' नामक प्रसिद्ध विद्यालय में दाखिल करा दिया। सन् १९०३ में वे पुनः अमरीका गये और पाँच वर्ष वहाँ रहकर पेरिस पहुँचे। तब पेरिस में जिब्रान ने चित्र-कला का अध्ययन किया। सन १९१२ में वे फिर अमरीका लौट गये और मरण-पर्यन्त न्यूयार्क में ही रहे।

सीरिया में रहकर जिब्रान अरबी भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं और वहाँ उनकी पुस्तकों का बहुत आदर हुआ। सन् १९१८ से लगभग उन्होंने अंग्रेजी में भी लिखना आरम्भ किया। तभी से उनकी अनोखी कला की शैली एवं अद्भुत गहन विचारों की ख्याति न केवल अरबी

अथवा अंग्रेजी भाषा भाषी जनता में अपितु अनुवाद द्वारा सारे योरोप एवं एशिया में फैल गईं। विश्व की तीस से अधिक जीवित भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हुए और वे 'बीसवीं सदी के ब्लेक' कहे जाने लगे।

कवि जिब्रान की समस्त पुस्तकें उनके स्वयं बनाये हुए चित्रों से विभूषित हैं। इन चित्रों का प्रदर्शन संसार के सभी देशों के मुख्य नगरों में हो चुका है। उनकी तुलना अमरीका के महान् कलाकार आगस्त रौडिन एवं विलियम ब्लेक से की जाती है। एक बार स्वयं आगस्त रौडिन ने कवि जिब्रान से अपना चित्र बनवाने की इच्छा प्रकट की थी और तभी से खलील जिब्रान की गणना अद्वितीय लेखक के साथ-साथ महान् चित्रकारों में होने लगी।

उन्होंने अंग्रेजी तथा अरबी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—

दि मैड मैन	जीसस दि सन् ऑफ मैन
दि फोर रनर	दि अर्थ गाड्स
दि प्राफेट	दि वाण्डरर
सैण्ड एण्ड फोम	दि गार्डन ऑफ दि प्राफेट
सीक्रेट्स ऑफ दि हार्ट	टीयर्स एण्ड लाफ्टर
स्प्रिट्स रिबैलियस	

कवि जिब्रान इस समय संसार में मौजूद नहीं हैं। १० अप्रैल १९३१ ई० को ४८ वर्ष की अवस्था में उनका देहान्त हो गया किन्तु उनकी रचनायें संसार में सदैव अमर-अमर रहेंगी। उनके विचार शान्ति मनुष्यता एवं विश्वबन्धुत्व का सन्देश सदैव सुनाते रहेंगे।

दो शब्द

जिब्रान की यह एक और पुस्तक हिन्दी-पाठकों की भेंट है। सन १९५० में पहली बार मैं जिब्रान की ओर आकर्षित हुआ। 'प्राफेट' को पढ़कर लगा कि जिब्रान ने एक ऐसी प्यास हृदय में पैदा कर दी है जिसे उन्हीं का साहित्य मिटा सकता है। ऐसी धुन सवार हुई कि उनकी जो भी पुस्तक अंग्रेजी में पा सका खोज निकाली और बार-बार पढ़ी। हिन्दी में भी कई पुस्तकों के अनुवाद पढ़े और तभी से जिब्रान के भक्तों में शामिल हो गया। सन १९५२ में मेरा पहला जिब्रान का अनुवाद 'घतामं' प्रकाशित हुआ और तब से निरन्तर जिब्रान के साहित्य का अनुसंधान कर रहा हूँ। खेद की बात है कि उनका सम्पूर्ण साहित्य किसी भी भाषा में प्राप्त नहीं है। एक अरसा हुआ उनकी एक पुस्तक 'गार्डन ऑफ दि प्राफेट' पा गया। इसे जितना पढ़ता हूँ उसीमें खो जाता हूँ। चाहकर भी उसका अनुवाद शीघ्र नहीं कर पाया। अब वह सपना पूरा हुआ और कहिए पूरा हुआ तो आशा से भी अधिक। सम्भवतः जिब्रान की हिन्दी में यह पहली ही पुस्तक होगी जो सजिल्द तथा सचित्र प्रकाशित हो रही है—एकदम वैसी ही जैसी कि मूल अंग्रेजी में है। भारती एसोसिएशन प्रकाशन का यह प्रयास सराहनीय है। तिस पर भी मूल्य अधिक नहीं रखा गया है।

ज्ञात होता है कि यह पुस्तक जिब्रान ने अपनी विश्वविख्यात पुस्तक 'प्रॉफेट' की परिशिष्ट के रूप में लिखी । इसकी शैली तथा ढाँचा एक-दम उसीकी भाँति है । ऐसा जान पड़ता है कि जो कुछ 'प्रॉफेट' में छूट गया वह जिब्रान ने इस पुस्तक में संवारकर सजा दिया और इस प्रकार अपने 'अन्तिम सन्देश' को पूरा किया ।

वही 'रहस्यमय पुट' इस पुस्तक के हृदय में भी व्याप्त है जिसके लिए जिब्रान प्रसिद्ध हैं । आरम्भ से ही पाठक उनकी जीवित हुई सादगी, भीगए चुम्बक-शक्ति तथा समस्त विचारों को अनुभव करने लगता है । जिब्रान के पुरातन विचार आज के मनुष्य की समस्याओं का हल प्रस्तुत करते हैं और उनकी काव्यमय शैली आज की काव्य-पद्धति से भी कहीं आगे है । उनको शैली एक साथ ही प्रबल किन्तु कोमल भयानक किन्तु मधुर आँसुओं में भीगे किन्तु आनन्ददायक और सादे किन्तु तूफानी सभी तरह के भाव प्रकट करने में सफल है । कितने भी गूढ़ और उलझे हुए विचार इस लेखनी के कारीगर के लिए कठिन नहीं हैं । रहस्यमय विचारों को अपनी लेखनी की शैली में सजाकर जिब्रान पढ़ने वाले को कभी हास्य तो कभी रुदन और कभी आनन्द तो कभी असह्य पीड़ा के झूले में झुलाते रहते हैं । उनके गहन विचार इन्हीं सीधे-सादे शब्दों की पोशाक पहनकर सीधे मनुष्य के हृदय में उतर जाते हैं और शीघ्र ही उसकी समस्त शक्तियों पर अधिकार जमा लेते हैं ।

कैसी अनोखी बात है जिब्रान ने जो वर्षों पहले लिखा वह आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण तथा सत्य है, अपितु मिलकर और भी कुछ तीखा तथा ओजस्वी बन गया है । उन्होंने भी तो लिखा है "और सत्य के जन्म से पहले भी सत्य तो सत्य ही था ।" हमारी सामाजिक बुराइयों का चित्रण उनकी कलम ने किस खूबी से किया है । मालूम पड़ता है कि हमारे लिए ही उन्होंने लिखा है "मेरे मित्रो और मेरे हमराहियो ! वह देश दयनीय है जो कि (अंध) विश्वासों से पूर्ण किन्तु

धर्म से शून्य है।" और "दयनीय है वह देश जोकि अलग टुकड़ों में बँटा है और प्रत्येक टुकड़ा अपने को एक देश समझता है।" वास्तव में जिब्रान की सीख किसी एक काल अथवा देश की नहीं है। वह तो हर काल और हर देश के लिए एक ऐसा अमर साहित्य बना गई है जिसे पढ़कर आने वाली संतानें विश्व-बन्धुत्व सत्य तथा ईश्वर को जान पायेंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मनुष्य एक-न-एक दिन जिब्रान के सच्चे विचारों को अवश्य अपनायेगा और "उस दिन" जिब्रान लिखते हैं "संसार जिन्दगी की मुसीबतों और हृदय की चीख-पुकारों से नहीं अपितु जीवन के आँसुओं तथा हास्य के संगीत से परिपूर्ण होगा। किन्तु उनका कहना है कि यह तभी हो सकेगा जबकि मनुष्य प्रेम के मूल्य आँसुओं व आनन्द तथा मृत्यु के संगीत को पहचान लेगा।

हिन्दी-पाठकों द्वारा जिब्रान के साहित्य का इतना आदर देखकर मुझे भरोसा है कि जिब्रान हिन्दी में भी अपना वैसा ही स्थान बना लेंगे जैसा कि अंग्रेज़ी में।

गाजियाबाद — नरेन्द्र चौधरी

२ दिसम्बर १९२९



१

तिशरीन के माह में जोकि यादगारों का महीना होता है अनेकों में एक एवं (सबका) प्रिय अलमुस्तफा, जोकि अपने दिन का स्वयं ही मध्याह्न था, अपनी जन्मभूमि के द्वीप को लौटा।

और जब उसका जहाज बन्दरगाह के निकट पहुँचा तो वह जहाज के अगले भाग में (आतुरता से) खड़ा हो गया। उसके नाविकों ने उसे चारों ओर से घेर लिया और (उस समय) उसके हृदय में स्वदेश लौट आने की खुशी हिलोरें ले रही थी।

और तब वह बोला और (ऐसा लगा) मानो सागर उसकी आवाज में समा गया हो। उसने कहा "देखते हो (यह है) हमारी जन्मभूमि का द्वीप। यहीं तो पृथ्वी ने हमें उभारा (जन्मा) था एक गीत एवं एक पहेली बनाकर—एक गीत आकाश की ऊँचाई में और एक पहेली पृथ्वी की गहराई में। और वह, जोकि आकाश तथा पृथ्वी के बीच में है गीत को फैलायेगा और पहेली को सुलझायेगा किन्तु हमारी उत्कंठा को समाप्त न कर पायेगा।

"सागर फिर हमें एक बार तट को सौंप रहा है। हम उसकी अनेक लहरों में एक लहर ही तो हैं। अपनी वाणी को आवाज देने के लिए वह हमें बाहर भेजता है किन्तु हम ऐसा कैसे कर सकते हैं जब तक कि हम अपने हृदय की एकरूपता पत्थर एवं रेत पर न तोड़ (पिस) लें।

'क्योंकि नाविकों एवं समुद्र का यही कानून है—यदि तुम स्वतन्त्रता चाहते हो तो तुम्हें कुहरे में परिवर्तित होना पड़ेगा। निराकार हमेशा आकार ग्रहण करता है जैसे अपरिमित ग्रह भी तो (एक दिन) सूर्य एवं चन्द्रमा बन जायेंगे। और हम जिन्होंने बहुत-कुछ पा लिया है, और जो अब अपने द्वीप को लौट आये हैं—कठोर सन्धि को हमें तो फिर एक बार कुहरा बन जाना चाहिए और प्रारम्भ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। और ऐसा कौन है जोकि (आकाश की) ऊँचाइयों तक जी सके और ऊँचा उठ सके सिवाय उसके जोकि आकांक्षा एवं स्वतन्त्रता में बिखरकर समा जाय?

'सदैव हमें तट (पर पहुँचने) की चाह रहेगी जिससे हम गा सकें और कोई (हमें) सुन सके। किन्तु उस लहर का क्या जोकि वहाँ टूट जाती है जहाँ सुनने के लिए कोई कान न हो? यह हमारे अन्दर अनसुना ही तो है जोकि हमारे गहरे सन्ताप (के घावों) को भरता है यहाँ तक कि यह भी अनसुना ही है जोकि हमारी आत्मा को काट छाँटकर आकार देता है और हमारे भाग्य को ढालता है।

तब उसके नाविकों में से एक आगे आया और बोला प्रभु, हमें इस बन्दरगाह तक पहुँचाने के लिए आप हमारी इच्छाओं के नायक बनें। और देखिए, अब हम (वहाँ) पहुँच गए हैं। फिर भी आप शोक की बातें करते हैं और ऐसे हृदयों की जोकि (मानो) टूटने वाले हैं।

और उसने उस (नाविक) को उत्तर दिया और कहा क्या मैंने स्वतन्त्रता की बात नहीं कही, एवं कुहरे के विषय में जोकि हमारी (सबसे) बड़ी स्वतन्त्रता है? फिर भी एक पीड़ा में ही मैं अपने जन्म के द्वीप की यह यात्रा कर रहा हूँ जैसे एक हत्या से बना प्रेत उन लोगों के सम्मुख सिर झुकाने आता है जिन्होंने उसकी हत्या की थी।

और (तब) एक और नाविक उठा और बोला "आह देखिए, समुद्र की दीवार पर (खड़े हुए) लोगों के झुण्ड! अपनी खामोशी में ही उन्हें आपके आने का दिन एवं घड़ी तक का पता लग गया है।

अपनी प्रिय आकांक्षा को लिये वे अपने खेतों एवं अंगूर के बगीचों में से
आकर इकट्ठा हो गए हैं आपके स्वागत के लिए।"

और अब अलमुस्तफा ने दूर लोगों के मुखड़ों पर दृष्टि डाली।
उसका हृदय उनकी आकांक्षाओं से भलीभाँति परिचित था। और वह
शांत हो गया।

और तब लोगों की तेज पुकार सुनाई पड़ी। वह आकाश की
(पुरानी) अटारियों की एवं प्रार्थनाओं की।

और उसने अपने नाविकों की ओर देखा तथा कहा और मैं
इसके लिए क्या लाया हूँ? एक दूर देश में मैं एक शिकारी था। सत्य
एवं शक्ति के साथ मैंने वे सब स्वर्ण-बाण समाप्त कर दिए जोकि
उन्होंने मुझे दिये थे, किन्तु मैं तो कोई भी शिकार अपने साथ नहीं
लाया (क्योंकि) मैंने बाणों का पीछा नहीं किया। सम्भवतः वे अग्नि
पक्ष के पंखों के किनारों में उलझे हुए आकाश में दौड़ रहे हों और
पृथ्वी पर कभी न गिरें और सम्भवतः वे ऐसे मनुष्यों के हाथ लग
गए हों जिन्हें अपनी रोटी एवं अग्नि के लिए उनकी (अत्यन्त)
आवश्यकता थी।

"मैं नहीं जानता कि उन्होंने अपनी उड़ान कहाँ पूरी की है किन्तु
मैं इतना (अवश्य) जानता हूँ कि उन्होंने आकाश में अपनी दौड़ अंकित
कर दी है।

इसीलिए ही प्रेम का हाथ अभी भी मेरे ऊपर है और तुम मेरे
नाविको अभी भी मेरी दृष्टि की नाव खेते हो। और मैं मूक नहीं
रहूँगा। और जब मेरे कण्ठ पर ऋतुओं का हाथ होगा तो मैं चीत्का
तथा जब मेरे ओंठ आग की लौ से जलते होंगे तो मैं गाऊँगा।"

और उन (नाविकों) के हृदय में हलचली मच गई क्योंकि उसने
ऐसी बातें कहीं। और (उनमें से) एक बोला "प्रभु हमें सब सिखा दें
और इसलिए, क्योंकि आपका रक्त हमारी नाड़ियों में बह रहा है
और हमारी सांस आपकी सुगन्ध से महक रही है..हम (सब) समझेंगे।"

उसने कहा

तब उसने उसे उत्तर दिया। वायु उसकी वाणी में थी। उसने कहा "क्या तुम मुझे एक विदाक बनाने के लिए मेरे जन्म-द्वीप पर आये हो? क्या अभी तक बुद्धि ने मुझे बींध नहीं किया? क्या मैं बहुत छोटा तथा अत्यधिक अल्हड़ हूँ कि बोलूँ तो केवल अपने ही विषय में जोकि गहरे का गहरेपन को पुकारने के समान है।

"जो बुद्धि ढूँढ़ता है वह (उसे) जलकमल के प्याले में ढूँढ़े, अथवा लाल मिट्टी के टुकड़े में। मैं तो अभी भी गायक हूँ। मैं तो अभी भी पृथ्वी (के गीतों) को गाऊँगा और मैं तुम्हारे भूले हुए सपनों को गाऊँगा, जोकि (एक) निद्रा से (दूसरी) निद्रा के बीच के दिन को चलकर पार करते हैं। किन्तु मैं समुद्र की ओर निहारता रहूँगा।"

और जब जहाज ने बन्दरगाह में प्रवेश किया और समुद्र की दीवार के पास पहुँच गया। इस प्रकार अलमुस्तफा अपने जन्म द्वीप में पहुँचा और एक बार फिर अपने लोगों के बीच खड़ा हुआ। और एक भारी आवाज उन (लोगों) के हृदयों में से स्फुटित हुई जिससे कि घर लौटने का एकाकीपन उसके अन्दर हिल उठा।

और वे सब खामोश थे उसकी आवाज सुनने के लिए, किन्तु उसने कुछ भी न कहा, क्योंकि यादगारों की पीड़ा ने उसे घेर रखा था। और अपने हृदय में उसने कहा "क्या मैंने कहा है कि मैं गाऊँगा? नहीं मैं तो अपने ओठों को केवल खोल [illegible] सकता हूँ कि जीवन की आवाज आगे आये और प्रसन्नता एवं सहारे के लिए वायु में फैल जाय।"

तब करीमा जोकि बचपन में उसके साथ उसकी माँ के बगीचे में खेली थी आगे आई और बोली "बारह वर्ष तुम अपना चेहरा हमसे छिपाये रहे हो। और बारह वर्ष हम तुम्हारी आवाज के भूखे तथा प्यासे रहे हैं।"

और अत्यधिक कोमल दृष्टि से उसने उसे देखा क्योंकि वह ही थी जिसने (उसकी अनुपस्थिति में) उसकी माँ के पलकों को बन्द किया

था जबकि मृत्यु के श्वेत पंखों ने उसे समेट लिया था।

और उत्तर में उसने कहा, "बारह वर्ष! तुम कहती हो बारह वर्ष करीमा! मैं अपनी आकांक्षाओं के सितारों को दण्ड से नहीं मापता और न ही मैं उनकी गहराई आवाज से बोझता हूं क्योंकि प्रेम जब घर के प्यार में उन्मत्त हो जाता है तो समय की माप एवं समय की आवाज को भी शून्य बना देता है।

"कुछ ऐसे क्षण होते हैं जोकि वियोग की सदियों को क्षण में समा लेते हैं। और जुदाई क्या है मस्तिष्क की शून्यता है! सम्भवतः हम तो जुदा ही नहीं हुए थे।"

और अलमुस्तफा ने लोगों पर (एक) दृष्टि डाली। उसने उन सभी को (एक बार) देखा—युवा तथा बूढ़े बलवान और हंसोड़े वे जोकि वायु तथा सूर्य के सम्पर्क में गुलाबी हो गए थे और वे जिनके चेहरे पीले थे और उन सभी के चेहरों पर इच्छाओं एवं प्रश्नों की आभा अंकित थी।

और (उनमें से) एक बोला "प्रभु जीवन ने हमारी आशाओं एवं आकांक्षाओं के साथ कटु व्यवहार किया है। हमारे हृदय दुखी हैं और हम कुछ नहीं समझ पाते। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमें सान्त्वना दें और हमारे दुखों का अर्थ समझाएं।"

उसका हृदय दयालुता से द्रवित हो उठा और वह बोला "जीवन समस्त जीवित वस्तुओं से बड़ा है जैसे कि सुन्दरता के पंख लगने से पहले सुन्दरता ने जन्म लिया, और जैसे कि सत्य तो उच्चारण होने से पूर्व भी सत्य ही था।

"जीवन हमारी खामोशियों में गाता है और हमारी निद्रा में सपने देखता है। तब भी जबकि हम पराजित एवं विनीत होते हैं जीवन सिंहासन पर बैठता है एवं बलवान बनता है। और जबकि हम रोते हैं तो जीवन (आने वाले) दिन पर मुस्कराता है और तब भी

स्वतन्त्र रहता है जबकि हम (गुलामी की) जंजीरों को घसीटते चलते हैं।

'प्रायः हम जीवन को कठोर नामों से पुकारते हैं किन्तु तभी जबकि हम स्वयं कटु एवं अन्धकारमय होते हैं। और हम उसे शून्य एवं निरर्थक समझते हैं किन्तु तभी जबकि (हमारी) आत्मा निर्जन स्थानों में भटकती होती है, और (हमारा) हृदय स्वयं की अत्यधिक चेतना की मदिरा पिये हुए होता है।

'जीवन अगाध और ऊँचा तथा दूरस्थ है और यद्यपि तुम्हारी विस्तीर्ण दृष्टि भी उसके पैरों तक नहीं पहुँच पाती फिर भी वह (तुम्हारे) करीब है। और यद्यपि तुम्हारे श्वास की श्वास ही उसके हृदय तक पहुँचती है तुम्हारी परछाईं की परछाईं ही उसके चेहरे को पार करती है (किन्तु) तुम्हारी हलकी-से-हलकी पुकार की प्रतिध्वनि उसके वक्षस्थल पर एक झरना एवं एक शरद ऋतु बन जाती है।

और जिन्दगी आवरण से ढकी हुई तथा छिपी हुई है जैसे कि तुम्हारी अनन्त आत्मा (तुमसे) छिपी हुई है और आवरण के पीछे है। और फिर भी जब जिन्दगी बोलती है तो समस्त वायु शब्द बन जाती है और जब वह फिर बोलती है तो तुम्हारे होठों की मुस्कान एवं आँखों के आँसू भी शब्दों में परिवर्तित हो जाते हैं। जब वह गाती है तो बहरे सुनते हैं तथा मग्न मुग्ध हो जाते हैं और जब वह चलती हुई आती है तो अन्धे उसे देखते हैं और विस्मित हो उठते हैं और विस्मय तथा आश्चर्य से उसका पीछा करते हैं।

और (अब) वह चुप हो गया और एक अनन्त खामोशी ने (सभी) लोगों को घेर लिया और उस खामोशी में था एक अज्ञात गान। उन (लोगों) के एकाकीपन एवं निरन्तर पीड़ा को सान्त्वना प्राप्त हो गई थी।

२

और उसने उसी तरह उन्हें (वहीं) छोड़ दिया और उस बग़ीचे के रास्ते पर चल पड़ा जोकि उसके माता-पिता का था जहाँ वे गहन निद्रा में लीन थे—वे और उसके पूर्वज।

और वहाँ ऐसे भी (अनेक) थे जो उसके पीछे-पीछे जाना चाहते थे यह सोचकर कि (वह एक अरसे के बाद) घर लौटा है और वह अकेला है क्योंकि उसका एक भी सम्बन्धी जीवित नहीं था जोकि उनके नियमानुसार प्रीतिभोजों से उसका स्वागत करता।

किन्तु उसके जहाज़ के प्रधान नाविक ने उन्हें समझाया और कहा "उन्हें अपने रास्ते पर (अकेले) जाने दो क्योंकि उसकी रोटी तो एकाकीपन की रोटी है और उसके प्याले में यादगारों की मदिरा है जिसे वे अकेले ही पियेंगे।"

और उसके नाविकों ने अपने (बढ़ते हुए) क़दम रोक लिए, क्योंकि वे जानते थे कि उसके कप्तान ने जो कुछ उनसे कहा है सच है। और उन सबने भी जोकि बन्दर की दीवार पर इकट्ठा हुए थे अपनी इच्छा के पैरों को घेर लिया।

केवल करीमा ही उसके एकाकीपन और उसकी यादगारों को सोचती हुई कुछ दूर हटकर उसके पीछे चल दी। वह बोली कुछ नहीं केवल (कुछ दूर चलकर) मुड़ी और अपने स्वयं के घर को चली गई और (अपने) बग़ीचे में बादाम के वृक्ष के नीचे फूट-फूटकर रो पड़ी किन्तु वह नहीं जानती थी कि वह किसलिए रोई।

स्वतन्त्र रहता है जबकि हम (गुलामी की) जंजीरों को घसीटते चलते हैं।

प्रायः हम जीवन को कठोर नामों से पुकारते हैं किन्तु तभी जबकि हम स्वयं कटु एवं अन्धकारमय होते हैं। और हम उसे शून्य एवं निरर्थक समझते हैं, किन्तु तभी जबकि (हमारी) आत्मा निर्जन स्थानों में भटकती होती है और (हमारा) हृदय स्वयं की अत्यधिक चेतना की मदिरा पिये हुए होता है।

जीवन अगाध और ऊँचा तथा दूरस्थ है और यद्यपि तुम्हारी विस्तीर्ण दृष्टि भी उसके पैरों तक नहीं पहुँच पाती फिर भी वह (तुम्हारे) करीब है। और यद्यपि तुम्हारे श्वास की श्वास ही उसके हृदय तक पहुँचती है, तुम्हारी परछाईं की परछाईं ही उसके चेहरे को पार करती है (किन्तु) तुम्हारी हल्की-से-हल्की पुकार की प्रतिध्वनि उसके वक्षःस्थल पर एक झरना एवं एक शरद ऋतु बन जाती है।

और जिन्दगी आवरण से ढकी हुई तथा छिपी हुई है, जैसे कि तुम्हारी अनन्त आत्मा (तुमसे) छिपी हुई है और आवरण के पीछे है। और फिर भी जब जिन्दगी बोलती है तो समस्त वायु शब्द बन जाती है और जब वह फिर बोलती है तो तुम्हारे ओठों की मुस्कान एवं आँखों के आँसू भी शब्दों में परिवर्तित हो जाते हैं। जब वह गाती है तो बहरे सुनते हैं तथा मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं और जब वह चलती हुई आती है तो अन्धे उसे देखते हैं और विस्मित हो उठते हैं और विस्मय तथा आश्चर्य से उसका पीछा करते हैं।

और (अब) वह चुप हो गया और एक अनन्त खामोशी ने (सभी) लोगों को घेर लिया और उस खामोशी में था एक अज्ञात गान। उन (लोगों) के एकाकीपन एवं निरन्तर पीड़ा को सान्त्वना प्राप्त हो गई थी।

उसने कहा

२

और उसने उसी तरह उन्हें (वहीं) छोड़ दिया और उस बगीचे के रास्ते पर चल पड़ा ताकि उसके माता-पिता का था जहाँ वे अनन्त निद्रा में लीन थे—वे और उनके पूर्वज।

और वहाँ ऐसे भी (अनेक) थे जो उसके पीछे-पीछे जाना चाहते थे यह सोचकर कि (वह एक घटना के बाद) घर लौटा है और वह अकेला है क्योंकि उसका एक भी सम्बन्धी जीवित नहीं था जोकि उनके नियमानुसार प्रीतिभोजों में उसका स्वागत करता।

किन्तु उसके जहाज के प्रधान नाविक ने उन्हें समझाया और कहा "उन्हें अपने रास्ते पर (अकेले) जाने दो क्योंकि उसकी रोटी तो एकाकीपन की रोटी है और उसके प्याले में याददाश्तों की मदिरा है जिसे वे अकेले ही पियेंगे।"

और उसके नाविकों ने अपने (बढ़ते हुए) कदम रोक लिए, क्योंकि वे जानते थे कि उनके प्रधान ने जो कुछ उनसे कहा है सच है। और उन सबने भी जोकि मन्दिर की दीवार पर इकट्ठा हुए थे मानो इच्छा के पैरों को रोक लिया।

केवल करीमा ही उसके एकाकीपन और उसकी याददाश्तों को सोचती हुई कुछ दूर हटकर उसके पीछे चल दी। वह बोली कुछ नहीं केवल (कुछ दूर चलकर) मुड़ी और अपने स्वयं के घर को चली गई और (अपने) बगीचे में बादाम के पेड़ के नीचे फूट-फूटकर रो पड़ी किन्तु वह नहीं जानती थी कि वह किसलिए रोई।

३

और अलमुस्तफा आगे बढ़ा और उसने अपने माता-पिता का बगीचा खोल लिया। वह बगीचे के अन्दर चला गया और (अन्दर से) दरवाजा बन्द कर लिया जिससे कि उसके पीछे कोई आदमी (भीतर) न आ सके।

और चालीस दिन तथा चालीस रात वह उस मकान और बगीचे में अकेला पड़ा रहा। और कोई भी तो (वहाँ) नहीं आया—दरवाजे के करीब भी नहीं क्योंकि वह बन्द था और सब लोग जानते थे कि उसे अकेला ही रहना था।

और चालीस दिन तथा चालीस रात बीत जाने के बाद अलमुस्तफा ने दरवाजा खोल दिया जिससे कि लोग अन्दर आ सकें।

और नौ आदमी उसके साथ रहने के लिए अन्दर आये—तीन नाविक उसके स्वयं के जहाज से तीन वे जिन्होंने मन्दिर में सेवाएं की थी, तीन वे जोकि उसके बचपन के खेल के साथी थे और ये उसके शिष्य थे।

और एक प्रातः उसके शिष्य उसके चारों ओर बैठ गए। उसकी आँखों में अनन्त दूरी एवं स्मृतियाँ बसी हुई थीं। और वह शिष्य जिसका नाम हाफिज था उससे बोला "प्रभु ऑर्फलीज नगर के विषय में कुछ बतायें और उन देशों के विषय में भी जहाँ कि आपने ये बारह वर्ष बिताये हैं।

ग्रौर ग्रलमुस्तफ़ा ख़ामोश ही बना रहा, उसने पहाड़ियों की ग्रोर देखा ग्रौर ग्रपनी ग्राँखें ग्रनन्त शून्य में गड़ा दीं। ग्रौर उसकी ख़ामोशी में एक संघर्ष था।

तब उसने कहा, 'मेरे मित्रो ग्रौर मेरे हमराहियो ! वह देश दयनीय है जोकि (पंथ) विश्वासों से पूर्ण है किन्तु धर्म से शून्य।

"वह देश भी दयनीय है जोकि उस कपड़े को पहनता है जिसे वह स्वयं नहीं बुनता ग्रौर वह मदिरा पीता है जो उसके स्वयं के मदिरा के कोल्हुग्रों से नहीं बहती।

'ग्रौर वह देश भी दयनीय है जोकि निर्दयी को शूरवीर मानता है ग्रौर दमकते हुए विजयी को उदार समझता है।

'ग्रौर वह देश भी दयनीय है जोकि सपने में एक इच्छा का तिरस्कार करता है ग्रौर जागृत ग्रवस्था में उसीके वश में लीन रहता है।

'ग्रौर वह देश भी दयनीय है जोकि मृत्यु के जुलूस में चलते समय के ग्रतिरिक्त कभी भी ग्रपनी ग्रावाज़ नहीं उठाता ग्रपने खंडहरों के ग्रतिरिक्त कहीं ग्रपनी बड़ाई नहीं हाँकता ग्रौर कभी बग़ावत नहीं करता सिवाय तब के जबकि उसकी गरदन तलवार ग्रौर पत्थर के बीच रख दी गई हो।

'ग्रौर वह देश भी दयनीय है जिसका राजनीतिज्ञ एक लोमड़ी है जिसका दार्शनिक एक बाज़ीगर है ग्रौर जिसकी कला पैबन्द लगाना ग्रौर बहुरूपिया बनाना है।

ग्रौर वह देश भी दयनीय है जो ग्रपने नये राजा का धूम-धाम से स्वागत करता है ग्रौर छी-छी करके (उसे) विदा करता है, केवल इस लिए कि दूसरे (राजा) का फिर धूम-धाम से स्वागत करे।

ग्रौर वह देश भी दयनीय है जिसके महात्मा वर्षों के साथ गूँगे हो गए हैं ग्रौर जिसके शूरवीर ग्रभी पालना भूल रहे हैं।

ग्रौर दयनीय है वह देश जोकि ग्रनेक टुकड़ों में बँटा हुग्रा है ग्रौर प्रत्येक टुकड़ा ग्रपने को एक देश समझता है।"

उसने कहा

४

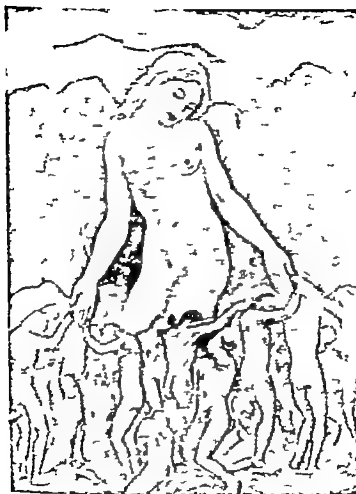
और एक बोला "हमें वे बातें बतायें जोकि अभी भी आपके हृदय में धड़क रही हैं।

और उसने उस (शिष्य) की ओर देखा। उसकी आवाज में तारों के गीत जैसा स्वर व्याप्त था। उसने कहा "अपने जागृत स्वप्न में जबकि तुम खामोश होते हो और अपनी अन्तरात्मा (की आवाज) को सुनते हो तुम्हारे विचार हिम के टुकड़ों की भाँति गिरते और फड़फड़ाते हैं और तुम्हारे समस्त अंगों की आवाजों को श्वेत खामोशी से ढँक देते हैं।

'और जागृत सपने क्या हैं सिवाय मेघ के जोकि तुम्हारे हृदय के आकाश-वृक्ष पर अंकुरित होता है एवं खिलता है। तुम्हारे विचार क्या हैं सिवाय पत्तियों के जिन्हें कि तुम्हारे हृदय की आँधी पहाड़ियों और उसके मैदानों पर बिखेर देती है।

और जैसे कि तुम शान्ति की प्रतीक्षा तब तक करते हो जब तक कि तुम्हारे अन्तर का निराकार आकार न ग्रहण कर ले, इसी प्रकार मेघ इकट्ठा होता है और (अपनी शक्ति को) संचय करता है जब तक कि ईश्वरीय उँगलियाँ उसके नन्हे सूर्य और चन्द्रमा एवं सितारे बनने की पुरातन इच्छा को पूर्ण न कर दें।

तब सारकिस वह जोकि अर्ध-सन्देही था बोला "किन्तु बसन्त



आयेगा और तुम्हारे सपनों का सम्पूर्ण हिम पिघल जायगा। हमारे विचार भी पिघल जायेंगे और कुछ भी तो नहीं बचेगा।"

और अलमुस्तफा ने यह कहकर उत्तर दिया "जब बसन्त अपनी प्रेयसी का दूधने सोनी वाटिकाओं तथा अंगूर के बगीचों में आयेगा तो वास्तव में ही बर्फ पिघल जायगा और झरना बनकर घाटियों में नदी को दूढ़ता दौड़ेगा और सदाबहार तथा सारोस के वृक्षों के लिए साकी का काम करेगा।

"इसी प्रकार तुम्हारे हृदय का बर्फ भी पिघल जायगा जबकि तुम्हारा बसन्त आयेगा और इस प्रकार तुम्हारे रहस्य झरने बनकर बह चलेंगे घाटियों में जीवन की नदी में जा मिलने के लिए और उन्हें अनन्त सागर तक ले जाने के लिए।

जब बसन्त आयेगा तो सभी वस्तुएँ पिघल जायेंगी और गीत बन जायेंगी यहाँ तक कि सितारे भी (और) बर्फ की बड़ी-बड़ी चट्टानें भी जोकि विस्तीर्ण मैदानों में धीरे-धीरे उतरती हैं सभी गाते हुए झरनों में मग्न जायेंगी। जब उस (ईश्वर) के चेहरे का सूर्य फैले हुए क्षितिज के ऊपर निकलेगा तो कौनसी एक-रूप जमी हुई वस्तुएँ तरल संगीत में परिवर्तित न हो जायेंगी और तुममें से कौन सदाबहार तथा सारोस के लिए साकी न बनेगा ?"

"यह तो कल की ही बात है कि तुम बहते सागर के साथ भ्रमण कर रहे थे और तुम्हारा कोई किनारा नहीं था तुम आत्म-विहीन थे। तब वायु ने जोकि तुम्हारे जीवन का श्वास है तुम्हें बुना अपने चेहरे पर प्रकाश का एक आवरण बनाया उसके हाथों ने तुम्हें इकट्ठा किया तुम्हें आकार दिया और एक ऊँचा मस्तक रखकर तुमने ऊँचाई प्राप्त की। किन्तु सागर तुम्हारे पीछे-पीछे चला और उसका गीत अभी तुम्हारे साथ है। और यद्यपि तुम अपने जन्मदाता को भूल गए हो (किन्तु) वह तो अपने ममत्व को स्थापित रखेगा और हमेशा तुम्हें अपने पास बुलायेगा।

उसने कहा

"पहाड़ों और रेगिस्तानों में भटकते हुए भी तुम उसके शीतल हृदय की गहराई को स्मरण करोगे। और यद्यपि प्रायः तुम्हें यह ज्ञात नहीं होगा कि किसके लिए तुम उन्मत्त हो किन्तु वास्तव में वह उसकी जय-जय शान्ति ही होगी।

"इसके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है? बगीचों में और कुञ्जों में तब जबकि पहाड़ों पर पत्तियों में वर्षा आती है, जबकि बर्फ गिरता है—एक आम्मधीमता एवं एक आगमन के स्वस्थ घाटियों में जब कि तुम अपने पशुओं के झुण्डों को नदी की ओर ले जाते हो तुम्हारे खेतों में जहाँ कि सोते चाँदी जैसे झरनों की भाँति (प्रकृति की) हरी पोशाक में खो जाते हैं तुम्हारे बगीचों में जहाँ कि सवेरे की ओस आकाश को प्रतिबिम्बित करती है तुम्हारे चरागाहों में जबकि संध्या की धूल तुम्हारे रास्ते पर हलका परदा बिछा देती है इन सभी में शायद तुम्हारे साथ है तुम्हारी वंश-परम्परा का एक वासी और तुम्हारे प्रेम का एक अधिकारी।

'यह तुम्हारे में एक हिम का टुकड़ा ही तो है जो नीचे सागर को दौड़ रहा है।"

५

और एक (दिन) सवेरे, जबकि वे बगीचे में घूम रहे थे द्वार पर एक स्त्री दिखाई पड़ी। वह करीमा थी वह जिसे कि अलमुस्तफ़ा ने बचपन में अपनी बहन की भांति प्यार किया था। और वह बाहर खड़ी थी खामोश और अपने हाथों से दरवाजा भी नहीं खटखटा रही थी, किन्तु केवल अस्फुट एवं दुःखमय दृष्टि से बगीचे को ताक रही थी।

और अलमुस्तफ़ा ने उसके पलकों पर उमड़ती आकांक्षा देख ली। तेज कदमों से वह दीवार के पास आया और द्वार उसके लिए खोल दिया। वह अन्दर आ गई और (इस प्रकार) उसका स्वागत हुआ।

और तब वह बोली "तुमने क्यों हम सब लोगों का बहिष्कार किया है जिससे कि हम तुम्हारे चेहरे के प्रकाश में नहीं रह सकते? और क्योंकि देखो इन अनेक वर्षों तक हमने तुम्हें प्यार किया है और तुम्हारे सकुशल लौटने की हमने आकांक्षित प्रतीक्षा की है। (सब) लोग तुम्हें पुकार रहे हैं और तुम्हारे साथ बातें करना चाहते हैं। और उनकी दूत बनकर तुम्हारे पास मैं प्रार्थना लेकर आई हूँ कि तुम लोगों को अपना दर्शन दो अपने ज्ञान की बातें उन्हें बताओ और टूटे हुए हृदयों को सान्त्वना दो तथा हमारी बुद्धिहीनता के लिए हमें शिक्षा दो।"

"पहाड़ों और रेगिस्तानों में भटकते हुए भी तुम उसके शीतल हृदय की गहराई को स्मरण करोगे। और यद्यपि प्रायः तुम्हें यह ज्ञान नहीं होगा कि किसके लिए तुम उन्मत्त हो किन्तु वास्तव में वह उसकी लय-बद्ध शान्ति ही होगी।

"इसके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है? बगीचों में और कुन्जों में तब जबकि पहाड़ों पर पत्तियों में वर्षा नाचती है, जबकि बर्फ गिरता है—एक भाग्यशीलता एवं एक आगमन के स्वरूप घाटियों में जब कि तुम अपने पशुओं के झुण्डों को नदी की ओर ले जाते हो तुम्हारे खेतों में जहां कि सोते चांदी जैसे झरनों की भांति (प्रकृति की) हरी पोशाक में जो जाते हैं तुम्हारे बगीचों में जहां कि सवेरे की ओस आकाश को प्रतिबिम्बित करती है तुम्हारे चरागाहों में जबकि संध्या की धूल तुम्हारे रास्ते पर हलका परदा बिछा देती है इन सभी में सागर तुम्हारे साथ है, तुम्हारी वंश-परम्परा का एक साक्षी और तुम्हारे प्रेम का एक अधिकारी।

'यह तुम्हारे में एक हिम का टुकड़ा ही तो है जो नीचे सागर को दौड़ रहा है।"

५

और एक (दिन) सवेरे, जबकि वे बगीचे में घूम रहे थे द्वार पर एक स्त्री दिखाई पड़ी। वह करीमा थी वह जिसे कि अलमुस्तफा ने बचपन में अपनी बहन की भाँति प्यार किया था। और वह बाहर खड़ी थी खामोश और अपने हाथों से दरवाजा भी नहीं खटखटा रही थी किन्तु केवल उत्सुक एवं दुःखमय दृष्टि से बगीचे को ताक रही थी।

और अलमुस्तफा ने उसके पलकों पर उमड़ती आकांक्षा देख ली। तेज कदमों से वह दीवार के पास आया और द्वार उसके लिए खोल दिया। वह अन्दर आ गई और (इस प्रकार) उसका स्वागत हुआ।

और तब वह बोली "तुमने क्यों हम सब लोगों का बहिष्कार किया है जिससे कि हम तुम्हारे चेहरे के प्रकाश में नहीं रह सकते? क्योंकि देखो इन अनेक वर्षों तक हमने तुम्हें प्यार किया है और तुम्हारे सकुशल लौटने की हमने आकांक्षित प्रतीक्षा की है। (सब) लोग तुम्हें पुकार रहे हैं और तुम्हारे साथ बातें करना चाहते हैं। और उनकी दूत बनकर तुम्हारे पास मैं प्रार्थना लेकर आई हूँ कि तुम लोगों को अपना दर्शन दो अपने ज्ञान की बातें उन्हें बताओ और टूटे [illegible] हृदयों को सान्त्वना दो तथा हमारी बुद्धिहीनता के लिए हमें क्षमा दो।"

और करीमा की ओर देखते हुए उसने कहा, "मुझे विद्वान् न कहो जबकि तुम समस्त मनुष्यों को ज्ञानी नहीं समझते। मैं तो एक युवा फल ही तो हूँ जोकि अभी भी टहनियों से लटक रहा है और अभी कल ही की तो बात है कि मैं केवल एक पुष्प ही था।

"और अपने में किसीको भी बुद्धिहीन न कहो, क्योंकि सत्य तो यह है कि हम न तो विद्वान् ही हैं और न अज्ञान। हम तो जीवन के वृक्ष पर हरी पत्तियाँ हैं और जीवन स्वयं ज्ञान के परे है तथा अवश्य ही अज्ञानता से भी दूर है।

"और क्या वास्तव में ही मैं तुमसे अलग हूँ? क्या तुम नहीं जानते कि दूरी कुछ भी नहीं है सिवाय उसके जिस पर कल्पना-शक्ति द्वारा आत्मा पुल नहीं बाँध पाती। और जब आत्मा उस दूरी पर पुल बाँध लेती है तो वह (दूरी) आत्मा में एक गीत बनकर समा जाती है।

"वह दूरी जोकि तुम्हारे और तुम्हारे पड़ोसी में कलह के कारण (उत्पन्न हुई) है वास्तव में उस दूरी से कहीं अधिक है जोकि तुम्हारे और सात देशों तथा सात समुद्र पार बसने वाले तुम्हारे प्रेमी के बीच में है।

"क्योंकि स्मृति के लिए दूरी कुछ नहीं है और विस्मृति में ही एक ऐसी खाई है जिसे न तो तुम्हारी वाणी और न ही तुम्हारे नैन बाँध सकते हैं।

"समुद्र के किनारों तथा ऊँची-से-ऊँची पहाड़ियों की चोटियों के बीच एक ऐसा गुप्त पथ है जिसे तुम्हें अवश्य तय करना पड़ेगा इससे पहले कि तुम पृथ्वी के पुत्रों के साथ एक हो सको।

"और तुम्हारे ज्ञान तथा तुम्हारी समझ के बीच एक ऐसा पथ है जिसे तुम्हें अवश्य ही खोज निकालना होगा इससे पहले कि तुम मनुष्य के साथ एक हो सको और इस प्रकार स्वयं में समा सको।

"तुम्हारे दायें हाथ जोकि देता है और तुम्हारे बायें हाथ जो कि लेता है, (दोनों) के बीच एक अनन्त दूरी है। केवल दोनों का

उसने कहा

प्रयोग करके, देकर और लेकर, ही तुम इन दोनों के बीच की दूरी समाप्त कर सकते हो क्योंकि इसी ज्ञान द्वारा कि (अन्त में) न तुम्हें कुछ देना है और न ही तुम्हें कुछ लेना है तुम दूरी को तय कर सकोगे ।

"वास्तव में सबसे विस्तीर्ण दूरी तो वह है जोकि तुम्हारे निद्रा स्वप्न एवं जागरण के बीच है और उसके बीच है जोकि केवल एक कर्म है और वह जो एक आकांक्षा है ।

"और एक और पथ है जिसे पार करने की तुम्हें अत्यन्त आवश्यकता है इससे पहले कि तुम जीवन में समा सको । किन्तु उस के विषय में अभी मैं कुछ नहीं कहूँगा यह देखते हुए कि भ्रमण करते करते तुम अभी ही थक चुके हो ।"

और करीमा की ओर देखते हुए उसने कहा "मुझे विद्वान् न कहो जबकि तुम समस्त मनुष्यों को ज्ञानी नहीं समझते। मैं तो एक युवा वृक्ष ही तो हूं, जोकि अभी भी टहनियों से संलग्न रहा है और अभी कल ही की तो बात है कि मैं केवल एक पुष्प ही था।

"और अपने में किसीको भी बुद्धिहीन न कहो क्योंकि सत्य तो यह है कि हम न तो विद्वान् ही हैं और न अज्ञान। हम तो जीवन के वृक्ष पर हरी पत्तियां हैं और जीवन स्वयं ज्ञान के परे है तथा अवश्य ही अज्ञानता से भी दूर है।

"और क्या वास्तव में ही मैं तुमसे अलग हूं? क्या तुम नहीं जानते कि दूरी कुछ भी नहीं है सिवाय उसके जिस पर कल्पना-शक्ति द्वारा आत्मा पुल नहीं बांध पाती। और जब आत्मा उस दूरी पर पुल बांध लेती है तो वह (दूरी) आत्मा में एक गीत बनकर समा जाती है।

"वह दूरी जोकि तुम्हारे और तुम्हारे पड़ोसी में कलह के कारण (उत्पन्न हुई) है वास्तव में उस दूरी से कहीं अधिक है जोकि तुम्हारे और सात देशों तथा सात समुद्र पार बसने वाले तुम्हारे प्रेमी के बीच में है।

"क्योंकि स्मृति के लिए दूरी कुछ नहीं है और विस्मृति में ही एक ऐसी खाई है जिसे न तो तुम्हारी वाणी और न ही तुम्हारे नेत्र लांघ सकते हैं।

"समुद्र के किनारों तथा ऊंची-से-ऊंची पहाड़ियों की चोटियों के बीच एक ऐसा गुप्त पथ है जिसे तुम्हें अवश्य तय करना पड़ेगा इससे पहले कि तुम पृथ्वी के पुत्रों के साथ एक हो सको।

"और तुम्हारे ज्ञान तथा तुम्हारी समझ के बीच एक ऐसा पथ है जिसे तुम्हें अवश्य ही खोज निकालना होगा इससे पहले कि तुम मनुष्य के साथ एक हो सको और इस प्रकार स्वयं में समा सको।

"तुम्हारे दायें हाथ जोकि देता है, और तुम्हारे बायें हाथ जो कि लेता है (दोनों) के बीच एक अनन्त दूरी है। केवल दोनों का

प्रयोग करके, देकर और लेकर, ही तुम इन दोनों के बीच की दूरी समाप्त कर सकते हो क्योंकि इसी ज्ञान द्वारा कि (स्व ई) न तुम्हें कुछ देना है और न ही तुम्हें कुछ लेना है, तुम दूरी को पार कर सकोगे।

'वास्तव में समस्त विसंगति दूरी ही यह है जो कि तुम्हारे स्व-रूप एवं आचरण के बीच है और उसी बीच है जो कि [illegible] कर्म है और वह जो एक आकांक्षा है।

"और एक और पथ है जिसे पार करने को तुम्हें [illegible] [illegible] रहता है इससे पहले कि तुम जीवन में प्रवेश करो। 'इस [illegible] के विषय में अभी मैं कुछ नहीं कहूँगा पर देखो तुम [illegible] [illegible] करते तुम अभी हो जब चुके हो।"

६

और तब वह करीमा के साथ चल पड़ा वह और (उसके) भी (शिष्य) यहाँ तक कि (वे) बाजार में भी पहुँच गए। उसने लोगों से बातें की अपने मित्रों एवं पड़ोसियों (से भी) और उनके हृदयों तथा नयनों में खुशी चमक रही थी।

और उसने कहा "तुम अपनी निद्रा में बढ़ते हो और अपना सच्चा जीवन सपनों में बिताते हो क्योंकि तुम्हारा समस्त दिन धन्यवाद देने में बीत जाता है उसके लिए जोकि तुमने रात्रि की खामोशी में पाया है।

'प्राय' तुम रात्रि को विश्राम करने का समय बताते हो किन्तु सत्य यह है कि रात्रि तो पाने और खोजने का समय है।

"दिन तुम्हें ज्ञान की शक्ति प्रदान करता है और तुम्हारी उंगलियों को लेने की कला में दक्ष बनाता है किन्तु यह रात्रि ही है जोकि तुम्हें जीवन के खजाने के मकान तक ले जाती है।

'सूर्य तो उन सब वस्तुओं को दिखा देता है जोकि प्रकाश के लिए अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाती रहती हैं। किन्तु यह रात्रि ही है जो कि उन्हें सितारों तक ऊँचा उठाती है।

'वास्तव में यह रात्रि की खामोशी है जोकि जंगल में पेड़ों पर तथा बगीचों में फूलों पर विवाह का आवरण बुनती है और महान्

कहेगा (क्या वह) जोकि तुम्हारे घर के पास से गुजरे और तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक भी न दे ?

'और कौन तुम्हें बहरा तथा अज्ञानी कहेगा जबकि वह तुमसे अनजान भाषा में बात करे, जिसे तुम तनिक भी नहीं समझते ?

'क्या यह वह नहीं है जिस तक पहुँचने का तुमने कभी प्रयास नहीं किया जिसके हृदय में प्रवेश करने की तुम्हारी कभी इच्छा नहीं हुई, जिसे कि तुम कुरूप कहते हो ?

'यदि कुरूपता कुछ है तो वास्तव में वह हमारी आँखों पर एक आवरण है एवं हमारे कानों में भरा हुआ मोम।

"किसीको भी कुरूप न कहो मेरे मित्र सिवाय एक आत्मा के भय को उसकी अपनी स्मृतियों के सम्मुख।

७

और एक दिन जबकि वे श्वेत चिनार के वृक्षों के लम्बे साये में बैठे हुए थे (उनमें से) एक बोला "प्रभु मैं समय से डरता हूँ। वह हम पर से गुज़रता है और हमसे हमारा यौवन लूट ले जाता है और बदले में हमें देता क्या है ?"

और उसने उत्तर दिया और कहा "अभी एक मुट्ठी भर मिट्टी तुम (हाथ में) लो। क्या तुम्हें उसमें कोई बीज अथवा कोई कीटाणु दिखाई पड़ता है ? यदि तुम्हारे हाथ विस्तीर्ण एवं चिरस्थायी हैं तो बीज एक वन बन सकता है और कीटाणु अप्सराओं का एक झुण्ड। और यह न भूल कि वर्ष जिन्होंने बीज को वन तथा कीटाणु को अप्सरा बनाया 'अब' (समय) से सम्बन्धित हैं समस्त वर्ष इस 'अब' से ही।

वर्षों की ऋतुएँ तुम्हारे परिवर्तित होते विचारों के अतिरिक्त क्या है ? बहार तुम्हारे हृदय में एक जागरण है और ग्रीष्म तुम्हारी की परिपूर्णता की स्वीकृति ही तो है। क्या शरद तुम्हारे में कि अभी भी बच्चा है लोरियाँ सुनाने वाला पुरातन नहीं है ? मैं तुमसे पूछता हूँ हेमन्त एक निद्रा के जोकि दूसरी ऋतुओं के से (फूलकर) मोटी हो गई है अतिरिक्त और क्या है ?"

और तब जिज्ञासु शिष्य मानस ने अपने चारों ओर दृष्टि और देखा कि अंजीर के वृक्ष पर फूलों से लेकर नीचे तक एक बेल

कहेगा (क्या वह) जोकि तुम्हारे घर के पास से गुजरे और तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक भी न दे ?

'और कौन तुम्हें बहरा तथा अज्ञानी कहेगा जबकि वह तुमसे अनजान भाषा में बात करे जिसे तुम तनिक भी नहीं समझते ?

'क्या यह वह नहीं है जिस तक पहुँचने का तुमने कभी प्रयास नहीं किया जिसके हृदय में प्रवेश करने की तुम्हारी कभी इच्छा नहीं हुई, जिसे कि तुम कुरूप कहते हो ?

'यदि कुरूपता कुछ है तो वास्तव में वह हमारी आँखों पर एक आवरण है एवं हमारे कानों में भरा हुआ मोम ।

"किसीको भी कुरूप न कहो मेरे मित्र सिवाय एक आत्मा के भय को उसकी अपनी स्मृतियों के सम्मुख ।"

७

और एक दिन जबकि वे श्वेत दिवार के वृक्षों के लम्बे साये में बैठे हुए थे (उनमें से) एक बोला "प्रभु मैं समय से डरता हूँ। वह हम पर से गुज़रता है और हमसे हमारा यौवन लूट ले जाता है, और बदले में हमें देता क्या है?"

और उसने उत्तर दिया और कहा "अभी एक मुट्ठी-भर मिट्टी चुन (हाथ में) लो। क्या तुम्हें उसमें कोई बीज अथवा कोई कीटाणु दिखाई पड़ता है? यदि तुम्हारे हाथ विस्तीर्ण एवं चिरस्थायी हैं तो बीज एक वन बन सकता है और कीटाणु [illegible] का एक समूह। और यह न भूलो कि वर्ष जिन्होंने बीज को वन तथा कीटाणु को [illegible] बनाया [illegible] 'अब' (समय) से सम्बन्धित हैं समस्त वर्ष इस 'अब' में हैं।

"वर्षों की ऋतुएँ तुम्हारे परिवर्तित होते विचारों के अतिरिक्त और क्या हैं? बहार तुम्हारे हृदय में एक जागरण है, और ग्रीष्म [illegible] की परिपूर्णता की स्वीकृति ही तो है। क्या [illegible] कि अभी भी बच्चा है लोरियाँ गुनगुनाना [illegible] नहीं है? और मैं तुमसे पूछता हूँ हेमन्त एक निद्रा के, जो कि दूसरी ऋतुओं के सपनों से (फूलकर) भारी हो गई है, अतिरिक्त और क्या है?"

और तब जिज्ञासु शिष्य [illegible] [illegible]

और देखा [illegible] पर फलों से [illegible]

हुई है। और वह बोला "अपराधियों को देखिए प्रभु ! वे भारी पलकों वाले चोर हैं, जोकि सूर्य के निस्सन्तान बच्चों से प्रकाश चुरा लेते हैं और उस रस का जोकि उसकी शाखाओं एवं पत्तियों में दौड़ता है (पी कर) मौज मनाते हैं।"

और उसने यह कहकर उत्तर दिया "मेरे मित्र हम सभी पराश्रयी हैं। हम, जोकि भूमि को मेहनत करके धड़कते हुए जीवन में परिवर्तित करते हैं उनसे ऊपर नहीं हैं जो प्रत्यक्ष मिट्टी से ही जीवन प्राप्त करते हैं यद्यपि मिट्टी को समझते नहीं हैं।

"क्या माँ अपने बच्चे से यह कहेगी 'मैं तुझे प्रकृति को जोकि तेरी बड़ी माँ है वापस देती हूँ, क्योंकि तू मुझे परेशान करता है (मेरे) हृदय तथा हाथों को ?

"और क्या गायक अपने स्वयं के गान की निन्दा कर सकता है, यह कहकर, 'अब अपनी प्रतिध्वनि की गुफा को वापस लौट जाओ जहाँ से तुम आये थे क्योंकि तुम्हारी आवाज मेरी साँस चाहती है ?

"और क्या एक गड़रिया अपनी भेड़ के बच्चे से यह कहेगा 'मेरे पास कोई चरागाह नहीं है जहाँ कि मैं तुझे ले जाऊँ इसलिए कट जा और इसके निमित्त बलिदान हो जा ?'

'नहीं मेरे मित्र, इन सब बातों के उत्तर प्रश्न उठने से पहले ही दे दिए जाते हैं और तुम्हारे सपनों की भाँति जबकि तुम सोए रहते हो पूर्ण हो जाते हैं।

'हम विधान के अनुसार, जोकि पुरातन एवं अमर है, एक-दूसरे के सहारे जीते हैं। इस प्रकार हमें प्रेममय कृपा पर जीवित रहना ही चाहिए। हम अपनी स्वतन्त्रता में एक-दूसरे को खोजते हैं। और (सभी) हम रास्ते पर घूमते हैं जबकि हमारे पास कोई अंगीठी नहीं होती जिसके सहारे बैठ सकें।

'मेरे मित्रो तथा मेरे भाइयो विस्तीर्ण पथ तो तुम्हारा हमराही ही है।

"लताएँ, जाकि वृक्षों पर (जीवित) रहती हैं रात्रि की मीठी खामोशी में पृथ्वी से छूट जाती हैं, और पृथ्वी अपने शान्त क्षणों में सूर्य के वक्षस्थल से (छूट) छूटती है।

"और सूर्य ऐसे ही जैसे कि मैं और तुम तथा अन्य सब जो यहाँ हैं उन राजकुमार के प्रीतिभोज में बराबर आदर के साथ बैठता है जिसके द्वार हमेशा खुले रहते हैं और जिसका दस्तरखान हमेशा बिछा रहता है।

"मानस मेरे मित्र जो कुछ भी यहाँ जीवित है उस पर जीवित रहता है जोकि यहाँ है और सब-कुछ यहाँ विश्वास पर जीवित है (तथा) अनन्त एवं सर्वोच्च की कृपा पर।"



और एक दिन जबकि आकाश सूर्योदय के कारण अभी पीला ही था उन सबने इकट्ठे बगीचे में प्रवेश किया और पूर्व की ओर देखने लगे तथा उगते हुए सूर्य के सम्मुख खामोश खड़े हो गए।

और कुछ क्षण पश्चात् अलमुस्तफा ने अपने हाथ से (एक ओर) इशारा किया और बोला, 'एक ओस की बूंद में भोर के सूर्य का प्रतिबिम्ब सूर्य से कम नहीं है। तुम्हारी आत्मा में जीवन का प्रतिबिम्ब जीवन से कम नहीं है। ओस की बूंद प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है क्योंकि वह और प्रकाश एक है और तुम जीवन को प्रतिबिम्बित करते हो क्योंकि तुम और जीवन एक हो।

'जब तुम अन्धकार से घिरे हुए हो तो कहो, इस अन्धकार का उदय अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ है और यद्यपि मुझे रात्रि की पीड़ा पूर्णत: घेरे हुए है, फिर भी मुझमें प्रकाश अवश्य जन्मेगा। कुमुदिनी के पुष्प की सन्ध्या में अपने आकार को ओझल करती हुई ओस की बूंद तुम्हारे स्वयं के ईश्वर के हृदय में जमा हो जाने से भिन्न नहीं है।

'यदि एक ओस की बूंद कहे किन्तु एक सहस्र वर्ष में मैं भी केवल ओस की बूंद ही हूँ तो तुम कहो और उत्तर दो 'क्या तू यह नहीं जानती कि तेरे कण में समस्त वर्षों का प्रकाश प्रज्वलित है।

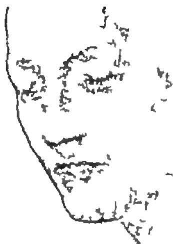


और एक दिन जबकि आकाश सूर्योदय के कारण अभी पीला ही था तब सबने इकट्ठे बगीचे में प्रवेश किया और पूर्व की ओर देखने लगे तथा उगते हुए सूर्य के सम्मुख खामोश खड़े हो गए।

और कुछ क्षण पश्चात् अलमुस्तफा ने अपने हाथ से (एक ओर) इशारा किया और बोला "एक ओस की बूंद में भोर के सूर्य का प्रतिबिम्ब सूर्य से कम नहीं है। तुम्हारी आत्मा में जीवन का प्रतिबिम्ब जीवन से कम नहीं है। ओस की बूंद प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है क्योंकि वह और प्रकाश एक है और तुम जीवन को प्रतिबिम्बित करते हो क्योंकि तुम और जीवन एक हो।

'जब तुम अन्धकार से घिरे हुए हो तो कहो, 'इस अन्धकार का उदय अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ है और यद्यपि मुझे रात्रि की पीड़ा पूर्णत घेरे हुए है, फिर भी मुझमें प्रकाश अवश्य जन्मेगा। कुमुदिनी के पुष्प की सन्ध्या में अपने आकार को गोल करती हुई ओस की बूंद तुम्हारे स्वयं के ईश्वर के हृदय में जमा हो जाने से भिन्न नहीं है।

'यदि एक ओस की बूंद कहे किन्तु एक सहस्र वर्ष में मैं भी केवल ओस की बूंद ही हूं तो तुम कहो और उत्तर दो 'क्या तू यह नहीं जानती कि तेरे वृत्त में समस्त वर्षों का प्रकाश प्रज्वलित है।



९

और एक सन्ध्या को एक तीव्र आँधी ने उस स्थान के दर्शन किये और अलमुस्तफ़ा तथा उसके नौ शिष्य अन्दर (मकान में) आ गए और आग के चारों ओर बैठ गए। व निश्चल एवं शान्त थे।

तब शिष्यों में से एक ने कहा, "मैं अकेला हूँ प्रभु और समय के घोड़े जोर जोर से मेरे वक्षस्थल को पीट रहे हैं।"

अलमुस्तफ़ा उठा और उन लोगों के बीच खड़ा हो गया तथा उसने ऐसी आवाज में कहना आरम्भ किया मानो वह तीव्र आँधी की आवाज हो, "अकेला! तो उसके लिए क्या? तुम अकेले आये थे और अकेले ही तुम कोहरे में समा जाओगे।

"इसलिए अपना प्याला एकान्त में और खामोशी के साथ पियो। शरद के दिनों ने विभिन्न ओठों को भिन्न-भिन्न प्याले प्रदान किये हैं और उनको कड़वी तथा मीठी मदिरा से भरा है। वैसे ही उन्होंने तुम्हारे प्याले को भी (किसी-न-किसी प्रकार की मदिरा से) भरा है।

"अपने प्याले को अकेले पियो यद्यपि उसमें तुम्हारे स्वयं के रक्त एवं आँसुओं का स्वाद है और 'प्यास' के उपहार के लिए जीवन की प्रशंसा करो क्योंकि बिना 'प्यास' के तुम्हारा हृदय एक उजड़े हुए समुद्र के किनारे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, संगीतविहीन एवं तूफ़ान रहित।

'अपना प्याला अकेले पियो और उसे खुशी से पियो।

उसे अपने मस्तक से ऊपर उठाओ और उनके लिए गहरा पियो जोकि (अपने प्याले) अकेले पीते हैं।

"एक बार मैंने मनुष्यों का साथ ग्रहण किया और उनके साथ उनकी प्रीतिभोज की मेज पर बैठा तथा उनके साथ मैंने मदिरा पी। किन्तु उनकी मदिरा मेरे सिर तक न चढ़ पाई और न ही मेरे वक्षस्थल में बही। वह केवल मेरे पैरों पर उतर गई। मेरी बुद्धि सूख गई, मेरे हृदय में ताला लग गया और वह बन्द हो गया। केवल मेरे पैर धुंधलके में उनके साथ थे।

"और फिर मैंने मनुष्य का साथ कभी ग्रहण नहीं किया और न ही उसकी मेज पर कभी उसकी मदिरा पी।

'इसलिए मैं तुमसे कहता हूं यद्यपि समय के पंजे तुम्हारी छाती को जोर-जोर से पीट रहे हैं परन्तु इससे क्या? तुम्हारे लिए (यही) अच्छा है कि तुम अपने दुःख का प्याला अकेले ही पियो और अपने सुख का प्याला भी तो तुम अकेले ही पियोगे।"

१०

और एक दिन जबकि फिरदौस (नाम का) एक यूनानी (उस) बगीचे में टहल रहा था उसके पैर में (अचानक) एक पत्थर से ठोकर लग गई और वह क्रुद्ध हो उठा। घूमकर उसने पत्थर को उठा लिया और धीमे स्वर में बोला "ओ मेरे रास्ते में मर्त्य वस्तु!" और उसने पत्थर को दूर फेंक दिया।

और अनेकों में एक एवं (सबका) प्रिय अलमुस्तफा ने कहा "तुम (यह) क्यों कहते हो 'ओ मर्त्य वस्तु'? तुम इस बगीचे में काफी समय से हो और यह भी नहीं जानते कि यहां मर्त्य वस्तु कोई नहीं है। सभी वस्तुएं दिन के ज्ञान एवं रात्रि के वैभव में जीवित हैं और जय पाती हैं। तुम और (यह) पत्थर एक हो। केवल हृदय की धड़कनों में अन्तर है। तुम्हारा हृदय थोड़ा अधिक तेज धड़कता है। है न मेरे मित्र? किन्तु यह (पत्थर भी तो) इतना निश्चल नहीं है।

"इसकी लय एक दूसरी लय हो सकती है। किन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम अपनी आत्मा की गहराइयों को खटखटाओ और आकाश की ऊंचाई को नापो तो तुम्हें केवल एक ही संगीत सुनाई पड़ेगा और उस संगीत में पत्थर और सितारे (मिलकर) गायेंगे एक-दूसरे के साथ पूर्णत: एक होकर।

'यदि मेरे शब्द तुम्हारी समझ तक नहीं पहुंचते तब प्रतीक्षा करो

जब तक कि दूसरा प्रभात आये। यदि तुमने इस पत्थर को स्व
कुचला है कि तुम अपने अन्धेपन में इससे टकरा गए थे तब क्या
एक सितारे को भी जिससे कि तुम्हारे मस्तक की मुठभेड़ हो ग
कुचल दोगे ? किन्तु (मैं जानता हूँ) वह दिन आयेगा जबकि तुम प
और सितारों को ऐसे चुनते फिरोगे जैसे कि एक बच्चा कुमुदिनी के
को चुनता है और तब तुम जानोगे कि इन सब वस्तुओं में
एवं सुगन्ध है।"



११

और सप्ताह के प्रथम दिन जबकि मन्दिरों के घण्टों की आवाज उनके कानों तक पहुँची एक ने कहा प्रभु हम इधर-उधर ईश्वर के विषय में अनेक बातें सुनते हैं। आप ईश्वर के विषय में क्या कहते हैं और वास्तव में ईश्वर है क्या?"

और वह उनके सम्मुख एक युवा वृक्ष की भाँति खड़ा हो गया तूफान एवं आँधी से निडर और उसने यह कहकर उत्तर दिया मेरे साथियो एवं प्रियो! अब सोचो एक ऐसा हृदय जोकि तुम्हारे समस्त हृदयों को समाये है एक ऐसा प्रेम जिसने तुम्हारे सम्पूर्ण प्रेम को सौंप रखा है, एक ऐसी आत्मा जिसमें तुम्हारी समस्त आत्माओं का बसेरा है एक ऐसी आवाज जिसमें तुम्हारी समस्त आवाजें बसती हैं और एक ऐसी खामोशी जोकि तुम्हारी समस्त खामोशियों से गहरी तथा अनन्त है।

अपनी स्वयं की सम्पूर्णता में ग्रहण करने के लिए एक ऐसी सुन्दरता खोजो जोकि समस्त वस्तुओं की सुन्दरता से अधिक मोहक है, एक ऐसा गीत जोकि समुद्र तथा वन के गीतों से अधिक विस्तीर्ण है एक ऐसी सम्पदा जोकि एक ऐसे सिंहासन पर विराजती है जिसके सम्मुख नृप-वाहित बाल-नक्षत्र भी एक चरणपीठ है और जो एक (ऐसा) राजदण्ड पकड़े हुए है जिसमें टके हुए कृत्तिका-नक्षत्र[1] ओस

---

१ सात सुन्दर वस्तुओं का समूह



११

और सप्ताह के प्रथम दिन [illegible] मन्दिरों के [illegible] की [illegible] उनके कानों तक पहुँची [illegible] "प्रभु हम इधर-उधर ईश्वर के विषय में अनेक बातें सुनते हैं। आप ईश्वर के विषय में क्या कहते हैं, और वास्तव में ईश्वर है क्या ?"

और वह उनके सम्मुख एक युवा वृक्ष की भाँति खड़ा हो [illegible] तूफ़ान एवं आँधी से निडर, और उसने यह कहकर उत्तर दिया [illegible] साथियो एवं प्रियो ! अब सोचो एक ऐसा हृदय जोकि तुम्हारे [illegible] हृदयों को समाये है एक ऐसा प्रेम जिसने तुम्हारे [illegible] रखा है एक ऐसी आत्मा जिसमें तुम्हारी समस्त [illegible] है एक ऐसी आवाज़ जिसमें तुम्हारी समस्त [illegible] ऐसी खामोशी जोकि तुम्हारी समस्त [illegible] है, और [illegible]

"अपनी स्वयं की सम्पूर्णता में [illegible] करने के लिए [illegible] सुन्दरता जोकि समस्त वस्तुओं की [illegible] एक ऐसा गीत जोकि समुद्र तथा वन के [illegible] एक ऐसी सम्पदा जोकि [illegible] सम्मुख पुष्प-सज्जित [illegible] (ऐसा) उच्चारण पाये हुए है जिसमें [illegible]

1 सात सुन्दर वस्तुओं का समूह

की बूँदों की थपथपाहट के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जान पड़ते।

"तुमने अभी तक केवल भोजन और आश्रय तथा एक कपड़ा और एक लकड़ी की ही चाह की है। अब उसे पाने का प्रयास करो जोकि न तो तुम्हारे तीरों के लिए निशाना है और न ही पत्थरों की एक गुफा है जोकि तत्त्वों द्वारा तुम्हारी रक्षा करेगी।

"और यदि मेरे शब्द एक पत्थर और पहेली ही हैं तब उसे पाओ उससे कम नहीं (जिससे) कि तुम्हारे हृदय टूट जायें और जिससे कि तुम्हारे प्रश्न तुम्हें उस सर्वोच्च ज्ञान एवं प्रेम तक ले जायें जिसे कि मनुष्य परमात्मा कहते हैं।"

और वह खामोश हो गया दूसरे सब भी और वे अपने हृदय में व्याकुल हो उठे। अलमुस्तफा उनके प्यार में द्रवित हो उठा और उसने उन्हें कोमल दृष्टि से निहारा तथा कहा 'आओ अब हमें पिता ईश्वर के विषय में और अधिक बातें नहीं करनी चाहिएँ। हमें देवताओं तुम्हारे पड़ोसियों और तुम्हारे भाइयों तथा उन तत्त्वों के विषय में बातें करनी चाहिएँ जोकि तुम्हारे घरों और खेतों में घूमते हैं।

"तुम कल्पना में बादलों तक पहुँच जाओगे और उनकी ऊँचाई का अनुमान भी लगा लोगे और तुम विस्तीर्ण सागर को पार कर लोगे तथा उसकी दूरी भी बता दोगे। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तुम पृथ्वी में एक बीज देखते हो तो अधिक ऊँचाई तक पहुँचते हो और जब तुम प्रातः की सुन्दरता अपने पड़ोसी से बताते हो तो अनेक सागर पार करते हो।

अनेक समय तुम अनन्त ईश्वर के गीत गाते हो और फिर भी सत्य यह है कि तुम (कोई) गाना नहीं सुन पाते। क्या इसलिए कि तुम गाती हुई चिड़ियों को सुन सको और शाखाओं से गिरती हुई पत्तियों (के गीत) को भी जबकि वायु गुज़रती है। और भूलो मत मेरे मित्र वे (पत्तियाँ) तभी गाती हैं जबकि शाखाओं से अलग हो जाती हैं।

"फिर मैं तुमसे कहता हूँ कि ईश्वर के विषय में, जोकि तुम्हारा

सब-कुछ है, इसकी स्वतन्त्रतापूर्वक (बातें न करो किन्तु और कुछ कहो
और एक-दूसरे को समझो पड़ोसी एक पड़ोसी को एक देवता एक
देवता को।

'क्योंकि घोंसले में बच्चे को कौन दाना सिखायेगा यदि मां-चिड़िया
आकाश में उड़ती रहे ? और अन्त में कौनसा पुष्प परिपूर्ण हो जायगा
जब तक कि मधु-मक्खी द्वारा दूसरे पुष्प से गर्भ न प्राप्त कर ले।

"जबकि तुम अपनी नन्ही आत्मा में खो जाते हो तभी तुम आकाश
को जिसे कि तुम ईश्वर कहते हो पाते हो। यह क्या इसलिए कि
(तब) तुम अपनी अनन्त आत्मा में रास्ते ढूंढ सकते हो और क्या इस
लिए कि (तब) तुम कम बेकार रह सको और मार्ग ढूंढ सको ?

मेरे साथियो और मेरे मित्रो यह बुद्धिमत्ता है कि हम ईश्वर
के विषय में जिसे कि हम समझने में असमर्थ हैं कम बातें करें और
एक-दूसरे के विषय में अधिक जिनको सम्भवतः हम समझ सकें। फिर
भी मैं तुम्हें यह बताना चाहूँगा कि हम ईश्वर की श्वास की एक सुगन्ध
हैं। हम ईश्वर ही हैं पत्ती में पुष्प में और प्रायः फल में भी।"

१२

और एक दिन तड़के जबकि सूर्य ऊपर उठ चुका था शिष्यों में से एक उन तीन में से एक जोकि बचपन में उसके साथ खेले थे उसके पास पहुँचा और बोला "प्रभु, मेरे कपड़े फट चुके हैं और मेरे पास दूसरे नहीं हैं। कृपया मुझे हाट तक जाकर लाने की आज्ञा दीजिए सम्भवतः मैं अपने लिए एक नया जामा ला सकूं।"

और अलमुस्तफा ने युवा मनुष्य की ओर देखा और उसने कहा "मुझे अपने कपड़े दे दो।" उसने ऐसा ही किया और वह खिलती हुई धूप में नंगा खड़ा हो गया।

और अलमुस्तफा ऐसी आवाज़ में बोला जोकि सड़क पर दौड़ते हुए जवान घोड़े की (टाप की) होती है "केवल नंगे ही सूर्य (के प्रकाश) में रहते हैं। केवल निष्कपट ही वायु पर सवारी करते हैं और केवल वही जो अपना रास्ता एक सहस्र बार खोता है अपने घर को लौटता है।

'देवता चतुर (मनुष्यों) से तंग आ गए हैं। और कल ही तो एक देवता ने मुझसे कहा 'हमने उन लोगों के लिए नर्क बनाया है जोकि चमकते (अधिक) हैं। अग्नि के अतिरिक्त और क्या है जो एक चमकती हुई सतह को खुरच सके और प्रत्येक वस्तु को पिघलाकर उसे प्राकृतिकता प्रदान कर सके?

और मैंने कहा "किन्तु नर्क बनाने में तुमने दानव भी तो उत्पन्न

कर दिए हैं जोकि गर्त पर राज्य करते हैं। किन्तु देवता ने उत्तर दिया, 'नहीं गर्त पर उनका राज्य है जो भूमि के सम्मुख भी न झुकें।

'बुद्धिमान देवता! वह मनुष्य एवं अर्ध-मानव की विधियों से परिचित है। वह उन दैवी पुरुषों में से एक है जोकि देवदूतों की सहायता के लिए आते हैं तब जबकि वे चतुर मनुष्यों द्वारा आकर्षित कर लिये जाते हैं।

"मेरे मित्र और मेरे साथियो केवल गधा ही सूर्य के प्रकाश में रहता है। केवल बिना पतवार के ही विशाल सागर पार किये जा सकते हैं। केवल वह जोकि रात्रि के साथ अन्धकारमय हो जाता है भोर के साथ जागता है, और वह जोकि हिम के साथ जड़ों में सोता है बहार तक पहुँचता है।

"क्योंकि तुम भी तो जड़ों की भाँति ही हो और जड़ों की तरह ही सरल हो इसीलिए तो पृथ्वी द्वारा तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है। और तुम खामोश हो फिर भी तुम्हारे पास तुम्हारी भावी शाखाओं में चार वायुओं का संगीत व्याप्त है।

"तुम दुर्बल हो और तुम निराकार हो फिर भी तुम विशाल सिन्दूर के वृक्ष का आरम्भ हो और आकाश पर बने अर्ध-चित्रित सरई के वृक्ष का भी।

"मैं फिर से कहता हूँ तुम काली मिट्टी तथा घूमते आकाश के मध्य में (एक) जड़ ही तो हो। और अनेक बार मैंने तुम्हें प्रकाश के साथ नृत्य करने के लिए उठते हुए देखा है किन्तु मैंने तुम्हें (बन्धहीन दशा में) लज्जायुक्त भी देखा है। (पर) सभी जड़ें लज्जाशील होती हैं। उन्होंने अपने हृदय को इतना गहरा छिपा लिया है कि वे यह भी नहीं जानतीं कि उन्हें अपने हृदय का क्या करना चाहिए।

"किन्तु वसन्त ऋतु आयेगी और वसन्त चपल सुन्दरी है, वह पहाड़ियों और मैदानों को उपजायेगी।"

१२

और एक दिन तड़के जबकि सूर्य ऊपर उठ चुका था शिष्यों में से एक उन तीन में से एक जोकि बचपन में उसके साथ खेले थे उसके पास पहुँचा और बोला, "प्रभु मेरे कपड़े फट चुके हैं और मेरे पास दूसरे नहीं हैं। कृपया मुझे हाट तक जाकर लाने की आज्ञा दीजिए सम्भवत मैं अपने लिए एक नया जोड़ा ला सकूँ।"

और अलमुस्तफा ने युवा मनुष्य की ओर देखा और उससे कहा "मुझे अपने कपड़े दे दो।" उसने ऐसा ही किया और वह खिलती हुई धूप में नंगा खड़ा हो गया।

और अलमुस्तफा ऐसी आवाज में बोला जोकि सड़क पर दौड़ते हुए जवान घोड़े की (टाप की) होती है "केवल नंगे ही सूर्य (के प्रकाश) में रहते हैं। केवल निष्कपट ही वायु पर सवारी करते हैं और केवल वही जो अपना रास्ता एक सहस्र बार खोता है अपने घर को लौटता है।

देवता चतुर (मनुष्यों) से तंग आ गए हैं। और कल ही तो एक देवता ने मुझसे कहा 'हमने उन लोगों के लिए नर्क बनाया है जोकि चमकते (अधिक) हैं। अग्नि के अतिरिक्त और क्या है जो एक चमकती हुई सतह को पुरच सके और प्रत्येक वस्तु को पिघलाकर उसे प्राकृतिकता प्रदान कर सके?

"और मैंने कहा किन्तु नर्क बनाने में तुमने दानव भी तो उत्पन्न

कर दिए हैं जोकि मर्त्य पर राज्य करते हैं। किन्तु देवता ने उत्तर दिया, "नहीं, नरक पर उनका राज्य है जो अग्नि के सम्पन्न नहीं न मृत्यु।

'बुद्धिमान देवता! वह मनुष्य एवं अर्ध-मनुष्य की विधियों से परिचित है। वह उन देवा पुरुषों में से एक है जोकि देवदूतों की सहायता के लिए आते हैं तब जबकि वे असुर मनुष्यों द्वारा पराजित कर लिये जाते हैं।

"मेरे मित्रो और मेरे साथियो केवल सदा ही सूर्य के प्रकाश में रहता है। केवल बिना पतवार के ही विशाल सागर पार किये जा सकते हैं। केवल वह जोकि रात्रि के साथ अन्धकारमय हो जाता है भोर के साथ जागता है, और वह जोकि हिम के साथ जड़ों में सोता है बहार तक पहुँचता है।

"क्योंकि तुम भी तो जड़ों की भाँति ही हो और जड़ों की तरह ही सरल हो, इसीलिए तो पृथ्वी द्वारा तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है। और तुम शान्त हो फिर भी तुम्हारे पास तुम्हारी भावी शाखाओं में चार वायुओं का संगीत व्याप्त है।

"तुम दुर्बल हो और तुम निराकार हो, फिर भी तुम विशाल चिनार के वृक्ष का आरम्भ हो और आकाश पर बन अर्ध-चित्रित मर्म के वृक्ष का भी।

"मैं फिर से कहता हूँ तुम काली मिट्टी तथा घूमते आकाश के मध्य में (एक) जड़ हो जो हो। और प्रायः बार मैंने तुम्हें प्रकाश के साथ नृत्य करने के लिए उठते हुए देखा है, किन्तु मैंने तुम्हें (लज्जाहीन रूप में) लज्जायुक्त भी देखा है। (पर) सभी जड़ें लज्जाशील होती हैं। उन्होंने अपने हृदय का इतना समय छिपा लिया है कि वे यह नहीं जानतीं कि उन्हें अपने हृदय का क्या करना चाहिए।

"किन्तु बसन्त आयेगा और बसन्त चंचल सुन्दरी है, वह पहाड़ियों और मैदानों को उन्मादनी।"

उसने कहा

१३

और एक ने जोकि मन्दिर में सेवाएँ कर चुका था विनती करते हुए कहा "हमें शिक्षा दें प्रभु, कि हमारी वाणी ऐसी बन जाय जैसे कि आपके शब्द लोगों के लिए एक भजन एवं सुरभित धूप है।"

और अलमुस्तफा ने उत्तर दिया और कहा "तुम अपने शब्दों से ऊपर उठोगे किन्तु तुम्हारा पथ एक संगीत एवं सुगन्ध बनकर रहेगा—एक गीत प्रेमियों के लिए और उन सबके लिए जोकि प्रेमिकाएँ हैं और एक सुगन्ध उनके लिए जोकि अपना जीवन एक बगीचे में बितायेंगे।

किन्तु तुम अपने शब्दों से ऊपर एक शिखर तक उठोगे जहाँ सितारों के टुकड़े बरसते हैं और तुम अपने हाथों को फैलाये रहोगे जब तक कि वे भर न जायें। तब तुम नीचे लेट जाओगे और सो जाओगे, जैसे श्वेत चिड़िया का बच्चा सफेद घोंसले में सोता है और (फिर) तुम अपने कल का सपना देखोगे जैसे कि हलका नीला फूल बहार का सपना देखता है।

हाँ तुम अपने शब्दों से अधिक गहरे जाओगे तुम खोये हुए स्रोतों के अन्त को खोज निकालोगे। और तुम गहराइयों की मिटती हुई आवाजों को जिन्हें कि अब तुम सुन भी नहीं पाते प्रतिध्वनित करती हुई एक छिपी कंदरा हो।

"तुम अपने शब्दों से गहरे जाओगे ही सब आवाजों से गहरे—पृथ्वी के हृदय तक और वहाँ तुम उस (ईश्वर) के साथ अकेले रहोगे जोकि आकाश-गंगा पर भी घूमता है।"

और कुछ क्षण पश्चात् शिष्यों में से एक ने पूछा 'प्रभु हमें अस्तित्व के विषय में बताइए, और यह 'होना' क्या है ?"

और अलमुस्तफा ने उस (शिष्य) पर एक लम्बी निगाह डाली और उसे प्यार किया। और (तब) वह खड़ा हो गया और उनसे कुछ दूर टहलता हुआ चला गया। तब लौटकर उसने कहा "इस बगीचे में मेरे माता-पिता लेटे हुए हैं (वे) जीवित हाथों द्वारा दफना दिये गए हैं और इसी बगीचे में गत वर्ष के बीज भी गड़े हुए हैं जोकि वायु के पंखों द्वारा यहाँ लाये गए थे। एक सहस्र बार मेरे माता-पिता यहाँ दफनाये जायेंगे एक सहस्र बार ही वायु यहाँ बीज बोयेगी और एक सहस्र बार मैं तुम और ये पुष्प भी एक साथ इसी वाटिका में आयेंगे जैसे कि अब (आये हैं) और हम जीवन को प्यार करते 'होंगे' हम भूख्य के सपने देखते 'होंगे' और हम सूर्य की ओर बढ़ते 'होंगे'।

किन्तु आज का 'होना' विद्वान् होना है एक मूर्ख के लिए अब नवी बनना नहीं बलवान बनना है किन्तु दुर्बल को बेकार करके नहीं छोटे बच्चों के साथ खेलना है किन्तु पिता की तरह नहीं अपितु साथी बनकर जो उनके खेलों को सीखना चाहता है।

"(और 'होना' क्या है ?)

"बूढ़े पुरुष एवं स्त्रियों के साथ सरल एवं निष्कपट व्यवहार करो, और उनके साथ प्राचीन सिंदूर के वृक्ष की छाया में बैठो यद्यपि तुम अभी बहार के साथ घूमते हो।

'एक कवि को ढूँढो चाहे वह सात नदियों के पार ही रहता हो और उसकी उपस्थिति में शान्ति पाओ बिना किसी इच्छा के बिना किसी सन्देह के और तुम्हारे ओठों पर कोई प्रश्न न हो।

उसने कहा

"यह जानो कि साधु और अपराधी भाई-भाई हैं जिनका पिता
मारा दयालु राजा है और उनमें से एक ने दूसरे से केवल एक क्षण
हले ही जन्म लिया था और इसीलिए हम उसे उत्तराधिकारी
ाजकुमार मानते हैं

सुन्दरता के पीछे-पीछे चलो चाहे वह (तुम्हें) पर्वत की दीवार
क ही क्यों न ले जाय। यद्यपि उसके पंख लगे हैं और तुम्हारे नहीं
ौर चाहे वह (उस) दीवार को भी पार कर जाय तो भी पीछा करो,
योंकि जहाँ सुन्दरता नहीं है वहाँ कुछ भी नहीं है।

बिना चारदीवारी के बगीचा बनाओ एक संरक्षक के बिना एक
गूर का बाग और एक ऐसा खजाना बनाओ जोकि आने-जाने वालों
' लिए सदैव खुला रहे।

"क्या हुआ जो तुम्हें किसीने लूट लिया या ठग लिया था धोखा
त्या था गुमराह किया अथवा अपने संपुट में फाँस लिया और
सके बाद तुम्हारी हँसी उड़ाई (क्योंकि दुनिया में यही तो होता है)।
ुसने पर भी तुम अपनी आत्मा में से झाँको और मुस्कराओ क्योंकि
म्हें मालूम है कि एक बहार है जोकि तुम्हारे बगीचे में तुम्हारी पत्तियों
नाचने आएगी और एक शरद है जोकि अंगूरों को पकाएगी और
ह भी ज्ञात है कि यदि तुम्हारी एक खिड़की भी पूर्व की ओर खुलती
तो तुम कभी भी रिक्त नहीं होओगे और तुम जानते हो कि वे सब
पराध करने वाले डाकू ठग और धोखेबाज आवश्यकता के समय
म्हारे भाई ही तो हैं और सम्भवतः उस अदृश्य नगरी के वासियों के
ए, जोकि इस नगर से ऊपर है तुम सभी वैसे ही हो।

"और अब तुम्हारे लिए, जिनके हाथ उन सब वस्तुओं को बनाते
ौर जोड़ते हैं जोकि हमारे दिन और रात के आराम के लिए आव
यक हैं"

" 'होने' का अर्थ है एक प्रगट उँगलियों वाला जुलाहा बनना, एक
मने वाला जो प्रकाश और दूरी को ध्यान में रखता है एक हलवाहा

उसने कहा

बनना और यह ध्यान में रखना कि प्रत्येक बीज के बीज के साथ-साथ तुम एक खजाना छिपा रहे हो एक मछुआ तथा शिकारी बनना हृदय में मछली और जानवरों के लिए दया रखते हुए और इससे भी अधिक दया मनुष्य की भूख एवं आवश्यकताओं के लिए रखते हुए।

"और सबसे ऊपर, मैं यह कहता हूँ मैं चाहूँगा कि तुम प्रत्येक एक-एक (दूसरे) प्रत्येक मनुष्य के उद्देश्य में साझीदार बनो क्योंकि इसी प्रकार तुम स्वयं अपना उद्देश्य पूरा कर सकते हो।

मेरे साथियो और मेरे प्रियो तुच्छ नहीं साहसी बनो संकुचित नहीं विस्तीर्ण बनो और तब तक जब तक कि मेरी अंतिम घड़ी और (इसी प्रकार) तुम्हारा अन्तिम समय वास्तव में (मेरा और) तुम्हारा अनन्त स्वत न बन जाय।"

और उसने बोलना बन्द कर दिया। और वहाँ उन नौ-के-नौ पर एक गहरी निस्तब्धता छा गई, और उनके हृदय उसकी ओर से फिर गए, क्योंकि वे उसके शब्दों को समझ नहीं पा रहे थे।

और देखो तीन मनुष्य जोकि नाविक थे समुद्र की ओर जाना चाहते थे वे जिन्होंने मन्दिर में सेवाएँ की थीं अपने देवालय को जाने के इच्छुक थे और उन्होंने जोकि उसके बचपन के समय के साथी थे हाट का रास्ता पसन्द किया। उसके शब्दों के लिए वे सब बहरे थे इसलिए उन शब्दों की आवाज इसी प्रकार उसीके पास वापस लौट गई जैसे कि थके और बिना घर के पक्षी शरण के लिए स्थान टटोलते हैं।

और अलमुस्तफा उनसे कुछ दूर बगीचे में चला गया, (उसने) उन पर एक बार निगाह भी नहीं डाली।

और उन्होंने आपस में तर्क करना प्रारम्भ कर दिया इसलिए कि अपने (वहाँ से) जाने के लिए बहाना ढूँढ लें।

और देखो वे सब मुड़े और प्रत्येक अपने-अपने स्थान को लौट गया (और) इस प्रकार अलमुस्तफा अनेकों में एक एवं (सबका) प्रिय फिर अकेला रह गया।

उसने कहा

अपनी अटारी से नीचे बगीचे में उतरी जहाँ कि रात की ओस ने उसक
मुस्कुराती बूटियों को चूमा।

'रात्रि की निस्तब्धता में राजा की बेटी बगीचे में प्रेम खोज
निकली किन्तु उसके पिता के विस्तीर्ण साम्राज्य में एक भी नहीं थ
जो उसका प्रेमी हो।

'इससे तो यही अच्छा होता कि वह एक हलवाहे की बेटी होती
अपनी निद्रा एक खेत में पूरी करती तथा सन्ध्या-समय पैरों पर रास्ते की
धूल लगाये तथा वस्त्रों की परत में अंगूर के बगीचे की सुगन्ध लिये
अपने पिता के घर लौटती। और जब रात्रि आती और रात्रि की देवी
इस संसार में प्रवेश करती तो वह अपने पैरों को मोड़ती है घाटी की
ओर से आती जहाँ कि उसका प्रेमी उसकी प्रतीक्षा करता होता।

'अथवा वह एक मठ में पुजारिन होती और धूप के स्थान पर
अपना हृदय जलाती जिससे कि उसका हृदय वायु तक पहुँच सके और
उसकी आत्मा को पूर्ण बना सके—एक दीपक होती, एक प्रकाश को
महान् प्रकाश की ओर उठाने के लिए, उन सबके साथ जोकि पूजा करते
हैं जो प्रेमी हैं और प्रेमिकाएँ हैं।

"अथवा वह वर्षों द्वारा बनाई गई एक बूढ़ी स्त्री होती और धूप में
बैठकर यह सोचती कि उसके यौवन में किसने साथ दिया था।"

और रात्रि गहरी निकलती गई। रात्रि के साथ मनमुग्ध भी
अन्धकारमय होता गया और उसकी आत्मा भी मानो एक बिन बरसा
बादल। तथा वह जोर से बोला—

'भारी है मेरी आत्मा अपने स्वयं के पके हुए फल से
भारी है मेरी आत्मा अपने स्वयं के फलों से।
कौन अब आयेगा और खायेगा तथा तृप्त होगा?
मेरी आत्मा लबालब भरी है मेरी मदिरा से
कौन अब ढालेगा और पियेगा और ठण्डा होगा
रेगिस्तान की गर्मी से?

काश म एक वृक्ष होता बिना फूल और बिना फल का
क्योंकि फलदायिकता की पीड़ा ऊसरपन से कहीं अधिक कड़वी है
और अमीर का दुःख जिससे कोई ग्रहण नहीं करता
कहीं बड़ा है एक भिखारी की निर्धनता से
        जिसे कोई नहीं देता ।

"काश मैं एक कुआँ होता सूखा एवं झुलसा हुआ
        और मनुष्य मेरे अन्दर पत्थर फेंकते
क्योंकि यह अच्छा और आसान है व्यय हो जाना
        अपितु जीवित जलकर उद्गम बनना
जबकि मनुष्य उसकी बगल से गुजरें और उसका पान न करें ।

"काश मैं एक बाँसुरी होता पैर के नीचे कुचली हुई
क्योंकि यह चाँदी के तार वाली एक वीणा होने से अच्छा है ।
ऐसे मकान में जिसके मालिक के उँगलियाँ ही नहीं हैं ।
और जिसके बच्चे बहरे हैं ।

१५

अब सात दिन और सात रात तक कोई आदमी बगीचे के निकट भी नहीं आया और अपनी स्मृतियों एवं पीड़ाओं के साथ वह अकेला ही बना रहा क्योंकि वे भी, जिन्होंने उसकी बातें प्यार तथा धैर्यपूर्वक सुनी थीं उससे विमुख होकर दूसरे दिनों की खोज में चले गए थे।

केवल करीमा आई उसके चेहरे पर खामोशी एक आवरण की तरह फैली हुई थी उसके हाथों में प्याला और तश्तरी थी उसके एकाकीपन और भूख के लिए मदिरा तथा खाना था। और ये वस्तुएँ उसके सामने रखकर वह अपने रास्ते (वापस) लौट गई।

और अलमुस्तफा ने फिर श्वेत चिनार के वृक्षों का साथ ग्रहण कर लिया और सड़क की ओर देखता हुआ वह बैठा रहा। जरा देर बाद उसने देखा मानो एक धूल ऊपर उठकर बादल बन गई है और वह (बादल) उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। उस बादल में से निकल कर वे नौ-कैजी (शिष्य) बाहर आते दिखाई पड़े, और उनके आगे-आगे करीमा पथ-प्रदर्शक बनी चली आ रही थी।

और अलमुस्तफा ने आगे बढ़कर सड़क पर ही उनसे भेंट की, और वे दरवाजे के अन्दर दाखिल हुए। सब-कुछ ठीक था मानो वे अभी एक घण्टे पहले ही अपने-अपने रास्ते पर गये हों।

वे अन्दर आ गए और उन्होंने उसके साथ उसके सस्ते आसन पर



१५

अब सात दिन और सात रात तक कोई आदमी बगीचे के निकट भी नहीं आया और अपनी स्मृतियों एवं पीड़ाओं के साथ वह अकेला ही बना रहा क्योंकि वे भी जिन्होंने उसकी बातें प्यार तथा धैर्यपूर्वक सुनी थीं उससे विमुख होकर दूसरे दिनों की खोज में चले गए थे।

केवल करीमा आई उसके चेहरे पर खामोशी एक आवरण की तरह फैली हुई थी उसके हाथों में प्याला और तश्तरी थी उसके एकाकीपन और भूख के लिए मदिरा तथा खाना था। और वे वस्तुएं उसके सामने सजाकर वह अपने रास्ते (वापस) लौट गई।

और अलमुस्तफा ने फिर श्वेत चिनार के वृक्षों का साथ ग्रहण कर लिया और सड़क की ओर देखता हुआ वह बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उसने देखा मानो एक धूल ऊपर उठकर बादल बन गई है और वह (बादल) उसकी ओर चला आ रहा है। उस बादल में से निकल कर वे नौ-के-नौ (शिष्य) बाहर आते दिखाई पड़े, और उनके आगे आगे करीमा पथ प्रदर्शक बनी चली आ रही थी।

और अलमुस्तफा ने आगे बढ़कर सड़क पर ही उनसे भेंट की और वे दरवाजे के अन्दर दाखिल हुए। सब-कुछ ठीक था मानो वे अभी एक घण्टे पहले ही अपने-अपने रास्ते पर गये हों।

वे अन्दर आ गए और उन्होंने उसके साथ उसके सस्ते आसन पर



ग्रहण किया, जबकि करीमा ने उनके लिए रोटी और सब्जी परोसी तथा
फिर मदिरा प्यालों में डाली। जब वह डाल रही थी तो उसने प्रभु
से पूछा और कहा "यदि मुझे आज्ञा दें तो मैं नगर जाकर आपके
प्यालों को फिर से भरने के लिए मदिरा ले आऊँ क्योंकि वह समाप्त
हो गई है?"

और उसने करीमा की ओर देखा। उसकी आँखों में एक यात्रा
तथा एक दूर-देश बसा हुआ था और उसने कहा "नहीं क्योंकि इस
समय के लिए यह यही पर्याप्त है।"

और उन्होंने खाया-पिया तथा वे सन्तुष्ट हुए। जब वह समाप्त
हुआ तो अनुगुञ्जित विस्तीर्ण सागर की भाँति गहरी एवं चन्द्रमा
के नीचे के तूफ़ान की तरह पूर्ण आवाज़ में बोला और उसने कहा
"मेरे साथियो और मेरे हमराहियो, हमें आज जुदा होना पड़ेगा।
एक अरसे से हम भयानक समुद्रों पर तैरते रहे हैं हम अत्यधिक ऊँचे
पहाड़ियों पर चढ़े हैं और हमने डटकर तूफ़ान का मुकाबला किया है।
हमने भूख को पहचाना है किन्तु (एक साथ) बैठकर हमने महाभोज
भी खाये हैं। अनेक समय हम नंगे रहे हैं किन्तु हमने राजसी वस्त्र भी
पहने हैं। हमने वास्तव में अत्यधिक लम्बा सफ़र तय किया है किन्तु
अब हम जुदा होते हैं। तुम इकट्ठे अपने रास्ते पर जाओगे और मैं
अकेला अपने पथ पर अग्रसर होऊँगा।

"और यद्यपि समुद्र तथा विस्तीर्ण भूमि हमें जुदा करेगी फिर भी
हम स्वर्ग की यात्रा में हम साथी रहेंगे।

"किन्तु इससे पहले कि हम अपने-अपने कठिन रास्ते पर अग्रसर
हों, मैं तुम्हें अपने हृदय की फ़सल तथा (जीवन का) निचोड़ प्रदान
करूँगा—

"तुम अपने रास्ते पर गाते हुए जाओ किन्तु प्रत्येक गीत को छोटा
रखो क्योंकि वे ही गीत जोकि तुम्हारे ओठों पर युवा ही मृत्यु को
प्राप्त होते हैं मनुष्य-हृदय में जीवित रहेंगे।

उसने कहा

"एक सुन्दर सत्य थोड़े शब्दों में कहो किन्तु एक असुन्दर
थोड़े शब्दों में भी मत कहो। जिस सुन्दरी के केश सूर्य के प्रका
चमकते हों उससे कहो कि वह सवेरे की पुत्री है। किन्तु यदि
(एक) अन्धा दिखाई पड़े तो उससे यह न कहो कि वह रात्रि के
एक है।

'बांसुरी बजाने वाले को ध्यान से सुनो जैसे कि वह अप्रैल
सुनता है किन्तु यदि तुम समालोचक अथवा दोष निकालने वालों
सुनो तो अपनी इन्द्रियों की भांति बहरे हो जाओ और उतनी
(निकल जाओ) जितनी कि तुम्हारी कल्पना।

'मेरे साथियो और मेरे प्रियो, अपने रास्ते पर तुम लम्बे म
वाले मनुष्यों से मिलोगे, उन्हें अपने पंख देना (लम्बे) सींगों
मनुष्यों से मिलोगे उन्हें कनेर के हार पहनाना (लम्बे)
वाले मनुष्यों से भी मिलोगे उनकी उंगलियों के लिए पुष्प
पंखुड़ियाँ देना और तीखी जिह्वा वाले मनुष्यों से भी मिलोगे
शब्दों के लिए मधु देना।

'और तुम इन सबसे तथा इनसे भी अधिक से मिलोगे;
मिलेंगे लंगड़े आदमी बहुरे की लकड़ियाँ बेचते हुए और अंधे
का पौधा बेचते हुए। और तुम्हें धनी मनुष्य मन्दिर के द्वार पर
मांगते हुए मिलेंगे।

'लंगड़े को अपनी तीव्रता प्रदान करना, अन्धे को अपनी
देना और यह ध्यान रखना कि तुम स्वयं अपने को धनी भिखारि
को देना क्योंकि वे सबसे अधिक जरूरतमन्द हैं और कोई भी
भीख के लिए हाथ नहीं फैलायेगा जब तक कि वह वास्तव में ही
न हो।

'मेरे साथियो और मेरे मित्रो मैं तुम्हें तुम्हारे (मेरे और तुम्ह
बीच के प्यार की सौगन्ध दिलाता हूँ कि तुम उन असंख्य रास्तों
जाओ जोकि रेगिस्तान में एक-दूसरे पर से गुजरते हैं जहाँ कि

और खरगोश (साथ-साथ) घूमते हैं और भेड़िये और भेड़ें भी।

"और मेरी यह बात याद रखो मैं तुम्हें देना नहीं सिखाता लेना सिखाता हूँ अस्वीकार करना नहीं संतुष्ट करना पढ़ाता हूँ और झुकने की नहीं समझने की शिक्षा देता हूँ अपने ओठों पर मुस्कान लेकर।

"मैं तुम्हें खामोशी नहीं सिखाता अपितु एक गीत किन्तु अधिक तेज नहीं।

"मैं तुम्हें तुम्हारे अनन्त सत्व का समझाता हूँ जिसमें समस्त प्राणी-मात्र व्याप्त हैं।

और वह आसन से उठ खड़ा हुआ और बाहर सीधा बगीचे में चला गया और जबकि सूर्य डूब रहा था वह सिनार के वृक्षों के साये में घूमता रहा। और वे उसके पीछे-पीछे थे जरा दूर हटकर क्योंकि उनके हृदय भारी हो गए थे और उनकी जिह्वाएँ अपने तालुओं से चिपक गई थीं।

केवल करीमा जबकि वह सब सामान जमा कर चुकी उसके पास आई और बोली "प्रभु, आप मुझे साथ ले चलें जिससे कि मैं कल के लिए और आगे आपकी यात्रा के लिए भोजन बनाती रहूँ।"

और उसने करीमा की ओर देखा ऐसी दृष्टि से जिसमें इस संसार के अतिरिक्त और अनेक संसार दिखाई पड़ते थे और उसने कहा "मेरी बहन और मेरी प्रिये यह तो हो चुका समय के आरम्भ से ही। भोजन और मदिरा तो तैयार है, कल के लिए, जैसे कि बीते कल के लिए भी और आज के लिए भी।

"मैं जाता हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य को लेकर चला जाऊँगा जिसे अभी तक आवाज नहीं मिली है तो वही सत्य फिर मुझे खोजेगा और इकट्ठा कर लेगा, चाहे मेरे समस्त तत्त्व अनन्त खामोशी में बिखरे पड़े हों। और फिर मुझे तुम्हारे सामने आना होगा कि मैं उस वाणी

"एक सुन्दर सत्य थोड़े शब्दों में कहो किन्तु एक असुन्दर सत्य थोड़े शब्दों में भी मत कहो। जिस सुन्दरी के केश सूर्य के प्रकाश में चमकते हों उससे कहो कि वह सवेरे की पुत्री है। किन्तु यदि तुम्हें (एक) अन्धा दिखाई पड़े तो उससे यह न कहो कि वह रात्रि के साथ एक है।

'बांसुरी बजाने वाले को ध्यान से सुनो जैसे कि वह वसन्त को सुनता है किन्तु यदि तुम समालोचक अथवा दोष निकालने वाले को सुनो तो अपनी हड्डियों की भांति बहरे हो जाओ और इतनी दूर (निकल जाओ) जितनी कि तुम्हारी कल्पना।

'मेरे साथियो और मेरे प्रियो अपने रास्ते पर तुम लम्बे नाखूनों वाले मनुष्यों से मिलोगे उन्हें अपने पंख देना (लम्बे) सींगों वाले मनुष्यों से मिलोगे उन्हें लारेल के हार पहनाना (लम्बे) पंजों वाले मनुष्यों से भी मिलोगे उनकी उंगलियों के लिए पुष्प की पंखुड़ियां देना और तीखी जिह्वा वाले मनुष्यों से भी मिलोगे उनके शब्दों के लिए मधु देना।

'और तुम इन सबसे तथा इनसे भी अधिक से मिलोगे; तुम्हें मिलेंगे लंगड़े आदमी सहारे की लकड़ियां बेचते हुए और अंधे देखने का शीशा बेचते हुए। और तुम्हें धनी मनुष्य मन्दिर के द्वार पर भीख मांगते हुए मिलेंगे।

'लंगड़े को अपनी तीव्रता प्रदान करना, अन्धे को अपनी दृष्टि देना और यह ध्यान रखना कि तुम स्वयं अपने को धनी भिखारियों को देना क्योंकि वे सबसे अधिक जरूरतमन्द हैं और कोई भी पुरुष भीख के लिए हाथ नहीं फैलायेगा जब तक कि वह वास्तव में ही गरीब न हो।

'मेरे साथियो और मेरे मित्रो मैं तुम्हें हमारे (मेरे और तुम्हारे) बीच के प्यार की सौगन्ध दिलाता हूं कि तुम उन अगणित रास्तों पर जाओ जोकि रेगिस्तान में एक-दूसरे पर से गुजरते हैं जहां कि शेर

और खरगोश (साथ-साथ) घूमते हैं और भेड़िये और भेड़ें भी।

"और मेरी यह बात याद रखो मैं तुम्हें दया नहीं सिखाता सेना सिखाता हूँ अस्वीकार करना नहीं संतुष्ट करना पढ़ाता हूँ और झुकने की नहीं समझने की शिक्षा देता हूँ अपने ओठों पर मुस्कान लेकर।

"मैं तुम्हें खामोशी नहीं सिखाता अपितु एक गीत किन्तु अधिक तेज नहीं।

"मैं तुम्हें तुम्हारे अनन्त तत्त्व को समझाता हूँ जिसमें समस्त प्राणी-मात्र व्याप्त है।"

और वह आसन से उठ खड़ा हुआ और बाहर सीधा बगीचे में चला गया और जबकि धूप ढल रहा था वह किनारे के वृक्षों के साये में घूमता रहा। और वे उसके पीछे-पीछे न गए दूर-दूर रहे क्योंकि उनके हृदय भारी हो गए थे और उनकी जिह्वाएँ अपने तालुओं से चिपक गई थीं।

केवल करीमा जबकि वह सब सामान जमा कर चुकी उसके पास आई और बोली "प्रभु, आप मुझे आज्ञा दें जिससे कि मैं कल के लिए और आगे आपकी यात्रा के लिए भोजन बनाती रहूँ।"

और उसने करीमा की ओर देखा ऐसी दृष्टि से जिसमें इस संसार के अतिरिक्त और अनेक संसार दिखाई पड़ते थे और उसने कहा "मेरी बहन और अति प्रिय वह तो हो चुका समय के आरम्भ से ही। भोजन और मदिरा तो तैयार है कल के लिए, जैसे कि बीते कल के लिए थी और आज के लिए भी।

"मैं जाता हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य को लेकर चला जाऊँगा जिसे अभी तक आकार नहीं दिया है, तो वही सत्य फिर मुझे खोजेगा और इकट्ठा कर लेगा चाहे मेरे समस्त तत्त्व अनन्त खामोशी में बिखरे पड़े हों। और फिर पुनः तुम्हारे सम्मुख प्रगट हूँगा कि मैं उस खामो-

उसने कहा

द्वारा बोल सकूं जोकि इन असीम खामोशियों के हृदय में फिर से उत्पन्न हुई है।

और यदि ज़रा-सी भी सुन्दरता रह जायगी जिसे कि मैंने तुम्हें नहीं बताया है तो मुझे फिर पुकार लिया जायगा हां मेरा स्वयं का नाम लेकर ही—अलमुस्तफ़ा। और मैं तुम्हें एक संकेत दूंगा जिससे कि तुम समझ जाओगे कि मैं जो कुछ छूट गया था उसे बताने के लिए फिर से आ गया हूं क्योंकि ईश्वर अपने को मनुष्य से छिपाये रखना और अपने शब्दों को मनुष्य के हृदय की गुफाओं में ढके रखना नहीं चाहेगा।

"मैं मृत्यु के पश्चात् भी जीऊंगा और मैं तुम्हारे कानों में गाऊंगा
विशाल समुद्र की लहर, जो वापस ले जायगी के पश्चात् भी
मैं तुम्हारे आसन पर बैठूंगा यद्यपि बिना शरीर के
और मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे खेतों को जाऊंगा
एक अदृश्य आत्मा बनकर।
मैं तुम्हारे पास तुम्हारी आग के किनारे बैठूंगा
एक अदृश्य अतिथि बनकर।
मृत्यु तो कुछ भी नहीं बदलती परदे के अतिरिक्त
जोकि हमारे चेहरे पर पड़ा रहता है।
बढ़ई फिर भी एक बढ़ई ही रहेगा
हलवाहा फिर भी एक हलवाहा ही रहेगा
और वह जोकि वायु के लिए गीत गाता है
फिर भी गतिमान ग्रहों के लिए गायेगा।"

और शिष्य ऐसे खामोश हो गए जैसे कि पत्थर और अपने हृदयों में सिसकने लगे क्योंकि उसने कहा था "मैं जाता हूं।" किन्तु किसी ने भी प्रभु को रोकने के लिए अपना हाथ बाहर नहीं निकाला और न ही कोई उसके पदचिह्नों पर आगे बढ़ा।

और अलमुस्तफ़ा अपनी मां के बगीचे से बाहर निकल आया।

उसने कहा

उसके पैर तीव्र गति से आगे बढ़ रहे थे, और वे सब ध्वनिरहित थे तेज हवा में उड़ती हुई पत्ती की भाँति वह उनसे दूर चला गया और उन्होंने देखा मानो—एक पीला प्रकाश ऊँचाई पर चढ़ रहा हो।

और वे मौन-के-मौन सड़क पर अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े। किन्तु करीमा अभी भी जमा होती रात्रि में खड़ी रही और उसने देखा कि किस प्रकार प्रकाश तथा तारों की जगमगाहट एक हो जाती है और अपनी असहायता तथा एकांतता को उसने ये शब्द कहकर सान्त्वना दी "मैं जाता हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य को लेकर चला जाऊँगा जिसे अभी तक आवाज नहीं मिली है तो वही सत्य फिर मुझे खोजेगा और इकट्ठा करेगा और फिर मैं आऊँगा।"

१६

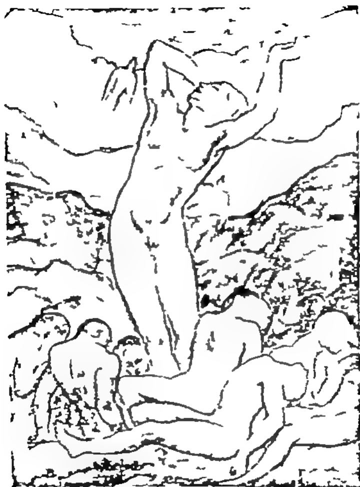
और अब सन्ध्या हो गई थी।

और वह पहाड़ों पर पहुँच गया। उसके पैर उसे कुहरे के पास ले आये थे। वह चट्टानों तथा श्वेत सिरों के वृक्षों के बीच जोकि सब वस्तुओं से छिपे हुए थे खड़ा था और वह बोला—

ओ कुहरे, मेरे भाई, श्वेत श्वास अभी तक
किसी आकार में नहीं बंधी है
मैं तुम्हारे पास वापस आ गया हूँ एक श्वेत
श्वास एवं ध्वनिविहीन बनकर—
एक शब्द भी अभी तक नहीं बोला।

"ओ कुहरे, मेरे पंखों वाले भाई कुहरे, हम अब एक साथ हैं
और साथ ही रहेंगे जीवन के दूसरे दिन तक,
कौनसा प्रभात तुम्हें ओस की बूंद बनाकर बगीचे में लिटायेगा
और मुझे एक बच्चा बनाकर एक स्त्री के वक्षस्थल पर,
और हम (एक-दूसरे को) याद रखेंगे।

"ओ कुहरे, मेरे भाई, मैं वापस आ गया हूँ
एक हृदय अपनी गहराइयों में सुनता हुआ
जैसा कि तुम्हारा हृदय



एक भटकती हुई आकांक्षा और तुम्हारी निरुद्देश्य आकांक्षा
की भाँति
एक विचार जो अभी तक इकट्ठा नहीं हुआ जैसा कि तुम्हारा
विचार ।

"ओ कुहरे, मेरे भाई मेरी माँ के प्रथम पुत्र
मेरे हाथ अभी भी उन बीजों को पकड़े हुए हैं
जोकि तुमने मुझे बिखरने के लिए दिये थे
और मेरे ओंठ सीये हुए हैं उस गीत पर
जोकि तुमने मुझे गाने के लिए दी थी
और मैं तुम्हारे लिए कोई फल नहीं लाया और न ही तुम्हारे पास
मैं कोई प्रतिध्वनि लेकर आया हूँ
क्योंकि मेरे हाथ अन्धे थे और मेरे ओंठ खामोश ।

"ओ कुहरे, मेरे भाई अत्यधिक प्रेम मैंने दुनिया से किया
और दुनिया ने मुझे (वैसा ही) प्यार किया
क्योंकि मेरी समस्त मुस्कराहटें दुनिया के ओठों पर थीं
और उसके समस्त आँसू मेरी आँखों में ।
फिर भी हमारे बीच एक खामोशी की खाई थी
जोकि वह (दुनिया) नहीं भरना चाहती थी
और जिसे मैं पार नहीं कर सकता था ।

"ओ कुहरे, मेरे भाई मेरे अमर भाई कुहरे,
मैंने पुराने गीत अपने बच्चों को सुनाये
और उन्होंने सुने, और उनके चेहरे पर आश्चर्य व्याप्त था
किन्तु कल ही वे अचानक गीत भूल जायेंगे
और मैं नहीं जानता था कि किसके पास तक

शायद गीत नहीं गा पायगी ।
और यद्यपि वह (गीत) मेरा अपना नहीं था
किन्तु वह मेरे हृदय में समा गया
और मेरे ओठों पर कुछ देर के लिए खेलता रहा ।

ओ कुहरे, मेरे भाई यद्यपि यह सब गुजर गया मैं शान्ति में
(मेरे विचार में) यह काफी था कि उनके लिए गाया जाय
क्योंकि जन्म ले चुके हैं ।
और यद्यपि यह गाना मेरा अपना नहीं है
परन्तु वह मेरे हृदय की सबसे गहरी आकांक्षा है ।

ओ कुहरे, मेरे भाई, मेरे भाई कुहरे
मैं तुम्हारे साथ अब एक हूँ ।
अब न स्वयं 'मैं' नहीं रहा ।
दीवारें गिर चुकी हैं
जंजीरें टूट चुकी हैं
मैं तुम्हारे पास आने के लिए ऊपर उठ रहा हूँ एक कुहरा बनक
और हम साथ-साथ सागर के ऊपर तैरेंगे जीवन के दूसरे दिन त
जबकि प्रभात तुम्हें ओस की बूंद बनाकर बगीचे में लिटा देगा,
और मुझे एक बच्चा बनाकर एक स्त्री के वक्षस्थल पर ।"